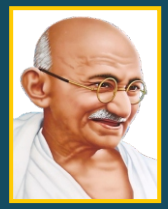

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के कथना अनुसार ''एक निर्दोषी व्यक्ति जिसने दूसरों की भलाई के लिए और अपने दुश्मनों के लिए भी अपने जीवन का बलिदान दिया, वह दुनिया का उद्धारकर्ता पाया गया। यह एक पूर्ण उपलब्धि थी। हर दिल में मसीह का जन्म होना चाहिए।

– राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

Source:
1) Gandhi, Christ and Christianity, P. No. 1, Author : Pascal Alan Nazareth
2) My encounter with truth, P. No. 88, Author : Mahatma Gandhi

''स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार ''नासरत के यीशु की पूजा करनी है, मेरे पास केवल एक ही रास्ता बचा है, वह यह है कि उन्हें भगवान के रुप में पूजा करें और कुछ नहीं।'' ''अगर मैं नासरत के यीशु के दिनों में फिलिस्तीन में रहता, तो मैं अपने आँसुओं से नहीं, बल्कि अपने दिल के खून से उसके पैर धोता।''

– विश्व मानव स्वामी विवेकानंद

Source:
1) The Complete works of Swamy Vivekananda, Vol-4, P. No. 143, Author : Swamy Vivekananda
2) The Master as I Saw Him, P. No. 233, Author : Sister Nivedita

''जब यीशु क्रूस पर थे तो उन्होंने खुद को नहीं बचाया, क्योंकि वे दुनिया को बचाने के लिए पैदा हुए थे न कि खुद को बचाने के लिए।'' ''जहां तक मेरी जानकारी है, केवल एक ही योग्य व्यक्ति है जिसे 'गुरु' कहा जा सकता है और वह है नासरत का यीशु और कोई नहीं।''

– पूर्व राष्ट्रपती डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन

Source:
1) A Series of Vasan's life history, P. No. 15, Author : G. T. Ashwathnarayan
2) To the Unknown God, Chapter 20, P. No. 161, Author : Vicki Harley Holland

एक महान सम्राट नेपोलियन बॉनपार्टे के कथना अनुसार" इस दुनिया की दो शक्तियां 'तलवार' और 'प्यार' है। प्यार हमेशा तलवार को हराता है। उदा. के लिये सिकंदर, सीजर और शारलेमेन ने अपनी तलवारों की शक्तिशाली शक्ति से राज्यों की स्थापना की। लेकिन आज वे नहीं रहे। हालाँकि, केवल यीशु मसीह ने ही प्रेम की नींव पर अपना राज्य स्थापित किया और आज भी लाखों लोग उनके लिए अपने जीवन का बलिदान देने के लिए तैयार हैं।''

– महान सम्राट नेपोलियन बॉनपार्टे

Source:
The message of Upanishad, P. No. 529, Author : Shri Swami Ranganathananda

Grace Bretheren Assembly
Paper Town, Bhadravathi – 577 302,
Shivamogga Dist. Karnataka State, India.

सत्यमेव जयते

(Hindi)

TRUTH ALONE TRIUMPHS

S. Giri

सत्यमेव जयते

SATHYAMEVA JAYATHE

(Hindi)

TRUTH ALONE TRIUMPHS

S. Giri, D C Sc & E, S A S

For copies Contact:

SATHYAMEVA JAYATHE
Post Box No:87, Shivamogga - 577201
Karnataka State, INDIA
E-Mail : satyamevjayate.life@gmail.com
Web site : www.satyamevjayate.life
Mob : 9845417088

Publisher:

Aatmik Shikshan Ministry,
Santacruz, Mumbai – 400055
Mob : 9967467963

Sathyameva jayate- Written by S. Giri based on Spiritual Contents collected from Various Religious Books and opinion expressed by our great leaders.

This book is also available in other languages

Third Impression : December 2024
Pages : 68
Offering : Rs.25/- (For Private Circulation only)

Translated By:

Dr. Kiran J. Desai, Bangalore, Mob: 9741271089
Mrs. Evelyn Oommen, Shivamogga, Mob: 8711000901

Publisher:

Pr. Lawrence D'souza
Aatmik Shikshan Ministry,
Sntacruz, Mumbai – 400055
Mob : 9967467963

Most Rev. Dr Francis Serao S J
Bishop of Shivamogga

Bishop's House
Malligenahalli, Sagara Road
Shivamogga – 577205.
Cell No. +91 94483 55813
Email : bpfrancisserraosj@gmail.com

अभिमान और आशीर्वचन की दो बातें!

प्रभू यीशु के भक्त एस. गिरी ने प्रभू यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार कर लिया है, और उनके द्वारा लिखी गई 'सत्यमेव जयते' इस छोटी सी पुस्तक के द्वारा उन्होनें प्रभू यीशु मसीह का परिचय प्रदान किया है। इसके पहले ही इस किताब का 15 भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है और यह भारत के कोने-कोने में रहने वाले तमाम लोगों के बीच में पहुंच चुकीहै।

इस पुस्तक में लगभग 20 अध्याय है, और यह 20 अध्यायों में भारतीय शास्त्रों और परंपराओं में मसीह के संदेशों के बारे में प्रकाश डालती हैं। हम पवित्र कुरान में मरियम और यीशु का उल्लेख होता हुआ देख सकते हैं। लेखक की कल्पना है कि इसके पाठकों को महात्मा गांधी और मदर टेरेसा की तरह ही मसीह के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

अंधेरे से उजाले की ओर सभी को चलना है। यीशु मसीह स्वर्ग और पृथ्वी का प्रकाश है जो हमें इस संसार के अन्धकार से बचा सकता है। धन्य हैं वे जो उस पर विश्वास करते हैं और हर एक अंधेरे में खोए हुए लोगों का नेतृत्व करना हमारा कर्तव्य है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व पैदा हुआ यीशु मसीह कई जिंदगियों के लिए एक आशा का प्रतीक बन गया है। पवित्र शास्त्र बाईबल में हम पढ़ते हैं कि "यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे बंदियों के लिए स्वतंत्रता की घोषणा करने और अंधों के लिए दृष्टि दान देने के लिए और उनको घोषणा करने के लिए,

उत्पीड़ितों को रिहा करने के लिए, प्रभु के अनुग्रह के वर्ष की घोषणा करने के लिए मुझे भेजा है। ईश्वर का राज्य सत्य, न्याय और वह है जो मनुष्यों के साथ सम्मान से पेश आता है। मसीह हमें इस मार्ग पर अपने जीवन का नेतृत्व करने के लिए बुलाते हैं। यह किताब उनके संदेश को कायम रखती हैं।

हम प्रभू यीशु मसीह के भक्त एस. गिरी के जीवन और उनके बहुमूल्य योगदान के लिए परमेश्वर को बहुत बहुत धन्यवाद देते हैं। आशा करते है कि यह पुस्तक भारत में रहनेवाले बहुत से लोगों के लिए प्रभू यीशु मसीह के जीवन और उनकी सेवकाई का परिचय कराएगी और हम सब उसके नाम से आशीषित हों जायेंगे, प्रभू आप सबको बहुतायत से आशिष देवे!

मसीह यीशु में आपका

+ Francis Serao

मोस्ट रेव्ह. डॉ. फ्रांसिस सेराव एस. जे.
शिमोगा के बिशप

प्रस्तावना

श्री एस. गिरी जो सत्य के साधक हैं इन्होंने अध्ययन किया है ,और विभिन्न ग्रंथों ,पुस्तकों पर शोध किया है ,और महान नेताओं के द्वारा दिए गए कथनों का अवलोकन करके साथ ही साथ प्रभु यीशु मसीह के जीवन और उनके सेवकाई का भी अध्ययन करने के बाद फिर इस पुस्तक को लिखा है ।" सत्यमेव जयते" यह किताब परमेश्वर की व्याख्या करने के लिए और सच्चाई को सरल तरीके से समझने के लिए एक आम आदमी को भी यह निश्चित रूप से सत्य को खोजने में मदद करेगा। मनुष्य के शाश्वत प्रश्न जैसे :मैं कौन हूँ ?मैं यहाँ क्यों आया हूँ? मैं कहाँ जा रहा हूँ? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? यह सारी बातें इस पुस्तक में संबोधित हैं।

मृत्यु के बाद का जीवन और कुछ नहीं बल्कि अनंत काल की शुरुआत है और भविष्य का सामना करने के लिए हम को कैसे तैयार होना चाहिए इस पुस्तक में बताया गया है। बहुत से लोग अपने जीवन के बारे में भ्रमित हैं, वे बेचैन हैं ,शांति और खुशी की तलाश में लगातार अपराध बोध से ग्रस्त हैं। इस संबंध में कई गुरुओं द्वारा अलग-अलग राय प्रसारित की गयी है लेकिन जो अधिकृत और स्वीकार्य है वह फिर से विवाद का विषय है।

हमारा जीवन अनमोल है लेकिन यह जल्द ही गुजर जाएगा। पृथ्वी पर लिया गया निर्णय हमारे अनन्त जीवन को प्रभावित करेगा। इसकी गंभीरता को ध्यान में रखते हुए ,श्री एस. गिरी मनुष्य के अंतिम गंतव्य स्थान ,यानी स्वर्ग और नर्क और स्वर्ग में कैसे जाना है ,के बारे में कई तथ्य सामने लाए हैं। एक स्पष्ट और खुले दिमाग वाला पाठक सत्य को खोजने और उसके आशीर्वाद का आनंद लेने के लिए निश्चित है।

मूल रूप से यह पुस्तक कन्नड़ भाषा में लिखी गई थी। जैसे-जैसे इसकी लोकप्रियता बढ़ी ,इसका अंग्रेजी और अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया। अर्थ को संक्षिप्त करने के लिए ,पुस्तक में वर्णित शास्त्र के कुछ अंशों

का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। यकीन मानिए ये किताबें पढ़ने और समझने के साथ-साथ एक बड़ी आशीष में बदल जाती हैं।

- **प्रभुदास टी.ए**
सेवानिवृत्त प्रबंधक (एच.आर.डी.), एम.पी.एम., भद्रावती

लेखक के कुछ शब्द:

हम जीवन के सभी क्षेत्रों में निर्णय लेते हैं, फिर भी हम अक्सर परमेश्वर के बारे में उसी परिश्रम से जांचने में झिझकते हैं। ईश्वर की आराधना कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम केवल अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं; बल्कि, हमें प्रभु की आराधना उस तरीके से करनी चाहिए जैसी वह चाहते हैं। इसलिए, यह मेरा कर्तव्य है कि सत्य की खोज में व्यापक अध्ययन के माध्यम से मैंने जो अंतर्दृष्टि प्राप्त की है, उसे आपके साथ साझा करूं। इन निष्कर्षों को सुलभ बनाने के लिए, मैंने उन्हें इस पुस्तक में संकलित किया है। यह पुस्तक पूर्वाग्रह, पक्षपात या व्यक्तिगत हित से मुक्त होकर, हमारे देश के कानूनी ढांचे के भीतर तक पहुंचती है। अंततः, सत्य की ही जीत होती है और मेरी सच्ची आशा है कि यह सत्य अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचे। इस कारण से, मैंने इस पुस्तक का शीर्षक सत्यमेव जयते रखा है। -*Truth Alone Triumphs.*

कई अनुरोधों के जवाब में, इस कार्य का पंद्रह भाषाओं में अनुवाद किया गया है, इसलिए मैं आपमें से प्रत्येक को इसका सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं।

आपका अपना **एस. गिरी**

अनुक्रमणिका

1. भारतीय सभ्यता.....08
2. मनुष्य की अमर आत्मा.....10
3. स्वर्ग जाने का मार्ग.....13
4. परमेश्वर की दया और क्षमा.....16
5. वेदों में निर्माता और उसके पूजा की विधि.....18
6. प्रभु यीशु का पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण.....24
7. यीशु मसीह फिर वापस आयेगा (पुनरागमन).....25
8. कौन हमें पापों से मुक्त कर सकता है?.....26
9. पवित्र बाइबल का इतिहास.....27
10. धनी आदमी और भिखारी लाजर का दृष्टांत.....29
11. यीशु मसीह कौन है? तुम्हारा निर्णय क्या है?.....30
12. हमें येशु मसीह की बताई हुई बातों पर क्यों विश्वास करना चाहिये.....31

दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख

13. यीशु मसीह ही पवित्र परमेश्वर है।.....33
14. यीशु मसीह के पहाड़ी उपदेश का एक सारांश.....35
15. यीशु मसीह के द्वारा किए हुए महत्वपूर्ण ३७ चमत्कार.....39
16. व्यभिचार में फंसी एक महिला को फैसले के लिए यीशु के पास लाया गया।.....46
17. मृत्यु के बाद हमारा क्या होता है? इस सवाल का स्पष्ट जवाब बाईबल में है।.....49
18. क्रूस पर बोली गई यीशु मसीह की सात वाणियाँ।.....53
19. पूरे विश्व में येशु की शिक्षाओं की घोषणा!.....54
20. दिव्य ज्ञान!.....64

1. भारतीय सभ्यता

हिंदू धर्म को दुनिया का सबसे पौराणिक और तीसरा बडा धर्म माना गया है। मद्यपूर्व के प्रवासी आर्य लोग ई.पू. 6000 के आसपास सिंधू घाटी में आकर भारत के उत्तरी भाग में बस गये थे। उनकी भाषा और संस्कृति सिंध प्रांत में रहने वाले स्वदेशी लोगों के साथ घुल मिल गई थी। जो लोग वहाँ बस गये थे उन्हे हिंदू कहते है। और जिस धर्म का पालन वह कर रहे थे उसे हिंदुत्व या हिंदू धर्म कहा गया है। जब वह स्थापित हुए उन्होने नैसर्गिक रीती से रचनाकार की खोज शुरू कर दी। वैदिक काल से, उनके शाम की प्रार्थना के द्वारा उन्होने इस श्लोक का उपयोग किया। देवतर्चना विधि *पृष्ठसंख्या 62*

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।

त्राहि मां कृपया देव शरणागत वत्सल।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम॥

तस्मात्तकारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जनार्दन॥

आ... नमः। प्रदक्षिण नमस्कारन समर्पयामि॥

Pāpōhaṁ pāpakarmahaṁ pāpātma pāpasambhava |

Trahimām kṛupāya dēva śharanagatavatsala |

An'yathā śharanaṁ nāsti tvamēva śharanaṁ mama ||

Tasmathkarun'ya bhāvēna rakṣha rakṣha Janārdana ||

ā... Namaḥ | pradakṣiṇa namaskāran samarpayāmi ||

अर्थ -इस जनम मे और पिछले जन्मो जन्मांतर से किये हुये सभी पाप कर्म भगवान को बार बार ग्रहण करने से साफ हो जाते है। मैं एक पापी होने के नाते मैने पाप कर्म किये है। मैं एक पापआत्मा हूं इसलिये मैं पापी हो चुका हुँ। शरणागत वात्सल्य प्रभू आप अपनी करुणा से मुझे बचाईये, आप के बिना मुझे कही पर भी आसरा नही है, इसिलिये मैं नमस्कार करता हुं, करुणा भाव से मुझे बचा लीजिये! मैं स्वीकार और सादर नमस्कार करता हूं।

पवित्र बाइबिल कहता है, "कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं। यदि हम पाप के बिना होने का दावा करते हैं, तो हम खुद को धोखा देते हैं और सच्चाई हम में नहीं है"। फिर पाप से मुक्ति कहां है? मनुष्य के अच्छे कर्म और पुण्य, पापों के बंधन से हमें मुक्ति नहीं दिला सकते। आज्ञाकारी नियम, अनुष्ठान, तपस्या के पालन और भक्ति की अमूल्य साधनाएं हमें पवित्र ईश्वर की उपस्थिति में धर्मी के रूप में खड़ा नहीं कर सकती हैं। जैसा कि हमने खुद को पाप में लिप्त किया है, क्या हमें स्वर्ग दिया जा सकता है? बाइबल कहती है कि हम सभी अशुद्ध हैं, और अपवित्र हैं और हमारे धर्म के कार्य ईश्वर के सामने गंदे कपड़ों की तरह हैं।

श्री पुरंदरदास ने जीवन को इस प्रकार बताया है:

Bevu belladolidalenu phala
havige haleraderenu phala ||
Kutilava bidadiha manujanaru
mantrava pataneya madidarenu phala ||
Matapitaranu balalisidaatanu
yatreya madidarenu phala ||
Kapatatanadli kaaduta janaranu
japavanu maadidarenu phala ||
Pathigala nindipa sathiyaru
bahuvidha vruathagala maadidarenu phala ||
Heena gunagalu hingade gangeya
snaanava maadidarenu phala ||

अर्थ: नीम को गुड में रखने का क्या फल मिलेगा
सांपो को दूध पिलाने से क्या फल मिलेगा।
धूर्तता ना छोडने वाला मनुष्य
अगर मंत्र पठन करेगा तो क्या फल मिलेगा।
मां बाप को दुःख देनेवाला
अगर यात्रा करेगा तो उसे क्या फल मिलेगा।
कपट पण मे लोगों को सतानेवाला

अगर जाप करेगा तो उसे क्या फल मिलेगा।
अपने पती की निंदा करनेवाली पत्नियां
अगर अनेक व्रत रखेंगी तो उन्हें क्या फल मिलेगा।
बिना धूर्तता के कृत्य छोडे गंगा नदी मे स्नान करके क्या फल मिलेगा।

2. मनुष्य की अमर आत्मा

आदि में, सभी जीव – पक्षी और जानवर परमेश्वर के शब्द के द्वारा उत्पन्न हुये, परमेश्वर ने इस प्रकार कहां.... ऐसा हो ...इस के द्वारा जीवन और मांस की शक्ति के साथ सब अस्तित्व में आए और उनकी मृत्यु के बाद, वे अस्तित्व में रहना बंद कर देते हैं। जब कि मनुष्य का निर्माण करते समय परमेश्वर ने कहा है, "हमने अपनी समानता में मनुष्य को बनाया है" इस लिए परमेश्वर ने जमीन की मिट्टी से मनुष्य को बनाया और उनके अन्दर जीवन की सांस फूंक दी। इस तरह से परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया। इसलिए, मनुष्य शरीर में रहता है और उसके पास जीवन और आत्मा है।

इस दुनिया में आदमी का जीवन अस्थायी है, एक न एक दिन हम निश्चित रूप से इस दुनिया को छोड़ देंगे। इस दुनिया में पैदा हुए आदमी बहादुर, अमीर, बुद्धिमान और गुणी हो सकता है लेकिन जब वह मृत्यु के बारे में सुनता है, डर और चिंता उसे परेशान करती है। क्योंकि हम इस जगत में कुछ भी लेकर नही आये और ना कुछ ले जाने वाले है| जो हम ने कमाया है वह सब कुछ यहां पर छोड़कर जाना है। मौत, रोगों, दुर्घटनाओं, प्राकृतिक आपदाऐ, उम्र या किसी अन्य तरीकों से आदमी के जीवन में आ सकती है। हम नहीं जानते हैं कि मौत कब?, और कैसे? और कहां? हमारे जीवन में आ सकती है, कोई भी मौत से बच नहीं सकता क्योंकि यह परमेश्वर द्वारा नियुक्त की गई है।

शरीर के लिए मृत्यु है, लेकिन आत्मा की कोई मृत्यु नहीं है। आत्मा शरीर में रहती है और जब यह शरीर छोड़ देती है (जब हमारी मृत्यु होती है) हमारी आत्मा अनंत काल में या तो स्वर्ग या नरक के लिए प्रवेश करती है, इसके अलावा इसमें कोई तीसरा अन्य स्थान नहीं है।

नरक

हम मे पाप का स्वभाव होने के कारण, हमें नरक में हमारी आत्माओं को प्रवेश हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं करना है यह बिल्कुल मुफ्त है। जैसा हमने सोचा है वैसे नरक में व्यभिचार, शराब पीना, नशा करना, अश्लील नृत्य और अन्य पाप कृत्य करने के मनोरंजन नहीं है। नरक भयानक जगह है यहां पर आग की एक झील है जो गंधक के साथ हमेशा हमेशा के लिए जल रही है। यह अनन्त यातना और सजा की एक जगह है। इन दिनों में विज्ञान ने भी इसे सत्य बताया हैं ।

पवित्र कुरान मे नरक का वर्णन है
(सुरा 23: 104 और 22: 19-22) निम्नलिखित तरीके से

22: Al-Hajj الحَجّ سُوْرَةُ ٢٢

19: یہ دو (فریق) ایک دوسرے کے دشمن اپنے پروردگار (کے بارے) میں جھگڑتے ہیں۔ تو کافر ہیں ان کے لئے آگ کے کپڑے قطع کئے جائیں گے)اور ان کے سروں پر جلتا ہوا پانی ڈالا جائے گا

अर्थ - जिन लोगों ने कुकर्म किया है उनके लिए आग के वस्त्र काटे जा चुके हैं। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।

20: اس سے ان کے پیٹ کے اندر کی چیزیں اور کھالیں گل جائیں

अर्थ - इससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी।

21: ارنے ٹھوکنے) کے لئے لوہے کے ہتھوڑے ہوں گاور ان (کے م

अर्थ - और उनके लिए (दंड देने को) लोहे के गुर्ज़ होंगे।

: 22

جب وہ چاہیں گے کہ اس رنج (وتکلیف) کی وجہ
سے دوزخ سے نکل جائیں تو پھر اسی میں لوٹا دیئےجائیں گے۔ اور
(کہا جائے گا کہ) جلنے کے عذاب کا مزہ چکھتے رہو

अर्थ -जब कभी वे घबराकर उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में लौटा दिए जाएँगे और (कहा जाएगा,) "चखो धधकती आग की यातना का मज़ा!"

23: Surah Al-Muminun المؤمنــون سُوْرَةُ ٢٣

104: ڑھائے ہوں گے آگ ان کے مونہوں

چ یوری تیاور وہ اس م یکو جھلس دے گ

अर्थ - आग उनके चेहरों को झुलसा देगी और उसमें उनके मुँह विकृत हो रहे होंगे। पवित्र बाइबल यह भी बताती है कि उन्हें काटने वाले कीड़े कभी नहीं मरेंगे और जलती हुई आग कभी न बुझेगी । हमे डरने की अवश्यकता नही है। क्योंकि, शैतान और उसके दूतों को दंडित करने के इरादे के साथ परमेश्वरने नरक बनाया है अनन्त आग मे निश्चित रूप से इंसान को दंडित करने का इरादा नहीं है।

स्वर्ग

पवित्र बाइबल कहता है कि सकेत फाटक से प्रवेश करो। नरक में प्रवेश करने के लिए चौड़ा रास्ता है। कई लोग इस रास्ते में जाएंगे। स्वर्ग का फाटक सकेत है; स्वर्ग का रास्ता कठिन है और केवल कुछ लोग इसे ढूंढते है। (मत्ती 7:13,14)

यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या दे सकता है?

(मरकुस 8:36,37)

यूहन्ना यीशु मसीह के प्रिय शिष्य ने दर्शन में स्वर्ग को देखा और इस प्रकार इसे प्रकाशित वाक्य में लिखा:

तब वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। परमेश्वर की महिमा उस में थी, ओर उस की ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाईं स्वच्छ थी।और उस की शहर पनाह बड़ी ऊंची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे। और उस की शहरपनाह की जुड़ाई यशब की थी, और नगर ऐसे चोखे सोने का था, जो स्वच्छ कांच के समान हो। और उस नगर की नीवें हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई थी, पहली

नींव यशब की थी, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालमणि की, चौथी मरकत की। पांचवीं गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नवीं पुखराज की, दसवीं लहसनिए की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं याकूत की। और बारहों फाटक, बारह मोतियों के थे । एक एक फाटक, एक एक मोती का बना था; और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी। और मैं ने उस में कोई मंदिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मंदिर हैं। और उस नगर में सूर्य और चंद्रमा के उजाले का प्रयोजन नहीं था, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा था, और मेम्ना उसका दीपक है।

उसमें कोई अपवित्र वस्तु, घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मोक्ष प्राप्ति की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं, वे ही उसमें प्रवेश कर सकते है! और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी और उस राष्ट्रभर में येशु मसीह का सिंहसन होगा और उनके दासों को उनका मुख दर्शन होगा। और वह जगत के अंत तक जियेंगे।

(प्रकाशितवाक्य 21: 9-27)

संकरे द्वार से प्रवेश करो, चौड़ा द्वार नरक का मार्ग है; बहुत से लोग वहां जाते हैं. स्वर्ग का द्वार जोखिमपूर्ण है, बहुत कम लोग इसे ढूंढ पाते हैं. यदि मनुष्य सारा संसार प्राप्त कर ले और अपना जीवन खो दे अर्थात नरक में जाए तो उसे क्या लाभ? अथवा किसी ने अपने जीवन अर्थात् उद्धार के लिये क्या दिया? पवित्र सत्यवेद ऐसा कहता है।

3. स्वर्ग जाने का मार्ग

क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने कभी भी पाप नहीं किया छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें। लेकिन जब इंसान ने पाप किया तब "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" ऐसा पवित्र शास्त्र बाईबल कहती है।

मसीह के जन्म के 700 साल पहले, यशायाह भविष्यद्वकता ने कहा, "देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी।" और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत, युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। यशायाह नबी इस प्रकार बताता है।

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन ही परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नही हुई। उसमें जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों के लिए ज्योति थी। वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा। क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने अनुग्रह प्राप्त किया । परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, परंतु एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रकट किया । (युहन्ना 1:1-18)

कुंवारी मरियम, पवित्रआत्मा द्वारा गर्भवती हुई, बेथलहम में उसने एक लड़के को जन्म दिया। वह अपने पहिलौठे बेटे को सामने लाई, और उस बच्चे को लपेटने के कपड़े में लपेट दिया और उसे एक चरनी में लिटा दिया क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी। परमेश्वर के दूत के संदेश के अनुसार, उन्होंने बच्चे का नाम "यीशु" रखा, जिसका अर्थ है कि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा।

जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु को देखा, तो उसने अपने दर्शकों की ओर देखा और कहा, "देखो, परमेश्वर का मेमना, जो संसार के पापों को दूर करता है!" हम मांस और रक्त के रूप में हैं, इसलिए वह मनुष्य रूप मे आया और इस में कोई भी सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया। (1 तिम 3:16)

यीशु मसीह जो प्रभु के स्वभाव में हैं, उन्होंने ईश्वर के साथ समानता को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल नहीं किया, पर सेवक का स्वभाव लेकर उसने खुद को कुछ नहीं बनाया, पर मनुष्य की समानता में बनाया गया, और एक मनुष्य के रूप में रहा है, वह मृत्यु तक आज्ञाकारी बनने के लिए खुद विनम्र हो गया – यहां तक कि एक क्रूस की मृत्यु भी उसने सह ली इसलिए परमेश्वर ने उसे सर्वोच्च स्थान पर पहुँचाया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों से ऊपर है, कि यीशु के नाम पर हर एक घुटने को स्वर्ग और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे झुकना चाहिए, और हर एक जीभ उसे अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है, परमपिता परमेश्वर की महिमा के लिए वह अपने लोगों को उनके पापों से मुक्त कर के उन्हें संभालेगा।

येशू ने बकरियों या बछड़ों की पेशकश नहीं की, लेकिन हमारे पापों से हमें छुड़ाने और हमें अनंत जीवन देने के लिए उसने अपने पवित्र लहु को बहा दिया । हमें एक बार और हमेशा के लिए यीशू मसीह के शरीर की पेशकश के माध्यम से पवित्र किया गया है और उसने एक ही बार मे परमेश्वर के सानिध्य मे प्रवेश किया और अपने आप को निर्दोष साबित कर परमेश्वर को अर्पित किया येशु का रक्त अनंत रूप से हमारे निर्जीव कर्मों से छुडाकर साफ़ कर पायेगा।

निम्नलिखित पवित्र बाइबल से गवाह हैं कि
यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है:

1. परमेश्वरने स्वयं कहा है, **"यह मेरा प्रिय पुत्र है, उससे मै अत्यंत प्रसन्न हूँ।"** (मत्ती 3:17)
2. एक शिष्य, पतरस ने कहा, **"तुम मसीह, जीवित परमेश्वर के पुत्र हो।"** (मत्ती 16:16)
3. येशू को सूलीपर चढानेवाले सूबेदार ने कहा, **"सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!"** (मत्ती 27:54)
4. थोमा यीशु के बारह शिष्यों में से एक था (जिन्होंने बाद में भारत में आकर प्रचार किया।),पुनर्जीवित यीशु को देखकर कहा **"मेरे परमेश्वर और मेरे परमेश्वर।"** (यूहन्ना 20:28)

5. यीशु मसीह ने कहा, **"जिसने भी मुझे देखा है उसने पिता परमेश्वर को (भगवान) देखा है। मैं पिता में हूँ, और पिता (परमेश्वर) मुझमें हैं।"** (यूहन्ना 14:8-10)
6. जब भी दुष्ट आत्माओं ने उसे देखा, वे उसके सामने झुक गए और कबूल किया कि **"तुम परमेश्वर के पुत्र हो।"** (मरकुस 3:11)

4. परमेश्वर की दया और क्षमा

भगवदगीता के ज्ञान योग का पठ 4:8 यह कहता है|

परित्रणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे //

Paritrāṇāya sādhūnāṁ vināśāya cha duṣkṛtām|
Dharmasaṁsthāpanārthāya sambhavāmi yuge yuge||

अर्थ: "इसका मतलब है कि वह दुष्टों का नाश करने, धर्मी लोगों को बचाने और हर युग में धर्म की स्थापना करने के लिए खुद (परमेश्वर) अवतार लेता रहेगा।"

यदि ऐसा होता है, तो पूरी दुनिया नष्ट हो जाएगी और केवल परमेश्वर ही इस दुनिया में रह जाएंगे, लेकिन परमेश्वर दयालू और प्रेमी है। पवित्र कुरान अल्लाह के नाम से शुरू होता है जैसे कि अल्लाह, सबसे दयालु और कृपालु है। यहां तक कि पवित्र बाइबल में परमेश्वर ने कहा, "मुझे दुष्टों की मौत का कोई आनंद नहीं है, लेकिन उसके तरीकों से हटो और जीवित रहो।"

यदि परमेश्वर ने हमारे अपराधों के अनुसार दंड दिया होता, तो हम आज तक जीवित नहीं होते। अगर आज हम सभी जीवित हैं, तो यह उसकी दया के कारण है। उनकी दयालुता कभी भी खत्म नहीं होगी लेकिन हर दिन उसकी दया हमारे लिये नई होती हैं।

हमारा भारतीय संविधान राष्ट्रपति मात्र को क्षमादान की सर्वोच्च शक्ति प्रदान करता है। मात्र इसका सुंदर विवरण नीचे दिया गया है:

क्षमा करना एक दयालु कार्य माना जाता है। यह अधिकार के रूप में नहीं मांगा जा सकता है, लेकिन राष्ट्रपति की शक्ति मुक्ति (क्षमा) प्रदान कर सकती है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा दी गई माफी व्यक्ति को अपराध और अपराध से दंड के तहत छूट देती है और अपराधी को ऐसी स्थिति में रखती है जहां कोई भी उसे दंडित नहीं कर सकता है। उसे एक अपराधी के रूप में न्यायकरने के बाद, जो सजा पाने का हकदार है, उसे क्षमा प्रदान किया गया तो, वह सजा से और दंडनियतासे मुक्त हो जाएगा। (अनुच्छेद 72)

यदि भारत का पहला नागरिक, हमारे देश के राष्ट्रपति के पास सजा को खत्म करने का सर्वोच्च अधिकार है, तो, बस कल्पना करें कि परमेश्वर और स्वर्ग का सृष्टिकर्ता को बनानेवालों के पास अधिकार कितना होगा! क्या कोई भी उनके फैसले को चुनौती दे सकता है? या कोई उसके अधिकार को अस्वीकार कर सकता है? सोचो,

एक बार, दो लोग प्रार्थना करने के लिए एक मंदिर में गए। एक फरीसी था और दूसरा एक चुंगी लेनेवाला था, जैसा कि फरीसी ने प्रार्थना करते हुए कहा, "हे परमेश्वर, मैं आपकी प्रशंसा करता हूं कि मैं अन्य लोगों की तरह नहीं हूं, कर वसूली करनेवाले अन्यायी, व्यभिचारी यहां तक कि इस कर संग्रहकर्ता के जैसे नहीं हूं। मैं अपने अच्छे गुणों के लिए आपको धन्यवाद देता हूं मैं आपको अपनी कमाई का दसवां हिस्सा प्रदान करता हूँ"। लेकिन, एक कोने में खड़े होकर चुंगी लेनेवाले ने अपने चेहरे को स्वर्ग के तरफ ऊपर उठाते हुए अपनी छाती पीटते हुए कहा, हे ईश्वर मुझपर दया करो क्युंकि मै एक पापी हूँ," इन दोनों के बीच चुंगी लेनेवाले को न्यायोचित माना गया और फरीसी को न्यायोचित नहीं माना गया है, जिन्होंने खुद को बड़ा किया, ऐसा इसलिए बाइबल कहती है। (लूका 18: 10)

पवित्र बाइबल कहती है कि यीशु मसीह ने हमारे खिलाफ लगाए गए आरोपपत्र (Chargesheet) को मिटाकर उसे नष्ट कर दिया है। इसलिए, अब हम अपराध बोध में नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए बाध्य हैं। करुणा न्याय पर जीत हासिल करके सिकोडता है। येशु मसीह पर विश्वास करनेवालों पर अब से कोई भी दंड की आज्ञा है हि नही, ऐसा पवित्र शास्त्र बाईबल कहता है।

जन्म/कर्म और पापों के बिना यीशु मसीह से हम को उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। (इफिसियों 1:7)

5. वेदों में निर्माता और उसके पूजा की विधि

"दूसरों के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित करें। महान बलिदान से ही महान कार्य संभव है। जो व्यक्ति अपने दिल से दूसरों के लिए रास्ता बनाता है वह एक महान व्यक्ति है **- स्वामी विवेकानंद**

(विद्युत वाणी, पेज नंबर 6 और 7)

वेदसंधपूर्ण सृष्टि के रचनाकारों में प्राचीन वेदों में सभी मनुष्यों के पापों की क्षमा के लिए होमबलि के रूप में देवताओं को बली दी जाती थी। कृष्ण यजुर्वेदमें बलिपशुकी योग्यता का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। वे नीचे दिए गए हैं।

कृष्ण यजुर्वेद में आनेवाले क्रम	**यीशु मसीह में उसकी पूर्ति**
पशुं स्नपयन्ति कूटकर्णखण्डश्नोणसप्तशफ वर्जम् ॥ (आपस्थंब प्रौथ सूत्र = 7-12-1, पृष्ठसंख्या: 421) ***Paśuṁ snapayanti kūṭakarṇakhaṇḍaslōnā saptaśāpha varjaṁ||*** Āpastamba-Śrauta-sūtra (-7-12-1, Page No. 421)	
अर्थ: जिस पशु की बलि देनी है वह बेदाग, निर्लज्ज होना चाहिए और पवित्र अर्पण करना चाहिए।	1."येशु पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग है।" (इब्रनिया 7:26) 2. "वह परम सुन्दर है।" (श्रेष्टगीत 8:46) 3. "तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है?" येशुने पूछा। (यहुन्ना 5:16)

धर्षा मानुषानिति नि युनक्ति धृत्या अद्धास्त्वौषधीभ्यः ॥

(त्रैतर्य संहिता कांड 6, प्रश्न सं. 3, पृष्ठसंख्या: 304)

dharṣhā mānuṣhān' iti ni yunakti dhṛtyā ||

Traittirīya-Samhitā (kanda 6, Q. No.3, Page No. 477)

अर्थ: जिस पशु की बलि दी जानी है उसे एक खंबे (योपा) से बांध देना चाहिए|	वहां उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।और पीलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ था, "यीशु नासरी यहूदियों का राजा।" (यूहन्ना 19:18-19)

अमायुं कृण्वन्तं संज्ञपयत इत्युक्त्वा पराङावर्ततेऽध्वर्युः ॥

(आपस्थंब प्रौथ सूत्र = 7-16-6, पृष्ठसंख्या: 433)

Amayūṁ kṛṇvantaṁ saṁganapayata ityuktvā paradāvartatē dhvaryuḥ||

Āpastamba-Śrauta-sūtra (= 7-16-6, Page No. 433)

अर्थ: जो पशु अर्पित किया जा रहा है वह शांत होना चाहिए और पशु की हड्डियां नहीं तोड़नी चाहिए ।	जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय वा ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। (यश 53: 7) परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगें न तोड़ीं। (यूहन्ना19:33)

दधातीडामुप ह्वयते पशवो वा इडा पशूनेवोप ह्वयते ॥

(त्रैतर्य संहिता कांड 6, प्रश्न सं. 3, पृष्ठसंख्या: 308)

dadhātiiḍāmupa hvayate pashavo vā iḍā pashūnevaupa hvayate ||

Taittirīya-Samhitā (kanda 6, Q. No. 3, Page No. 495)

अर्थ: बलि दिए गए पशु का मांस खाना चाहिए।	तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांग कर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, "लो, खाओ; यह मेरी देह है। फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ।" (मत्ती 26:26-27)

यत्पशुरपां पेरुरसीत्याह्वैष ह्यपां पाता ॥

(त्रैतर्य संहिता कांड 6, प्रश्न सं. 3, पृष्ठसंख्या: 304)

yatpashurapām perurasiityāthaeṣha hiapām pātā ||

(Taittirīya-Samhitā, kanda 6, Q. No. 3, Page No. 478)

अर्थ: यज्ञ के लिए जल दिया जाना चाहिए।	पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं प्यासा हूं। उन्होंने सिरके में भिगोए हुए स्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया। जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा "पूरा हुआ"। (युहन्ना 19:28-29)

वपाश्रपणी पुनरन्वारभतेऽस्मिन्नेव लोके प्रति तिष्ठति ॥

(त्रैतर्य संहिता कांड 6, प्र्श्न सं. 3, पृष्ठसंख्या: 306)

vapāshrapaṇī punaranvārabhateasminneva
loke prati tiṣhṭhati ||

Taittirīya-Samhitā (Kanda 6, Q. No. 3, Page No. 486)

अर्थ: बलि देनेवाले जानवर कांटो से छेदा जाना चाहिए|	सिपाहियों ने येशू के कपड़े उतारकर उसे किरिमजी बागा पहिनाया।और काटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा। (मती 27:28-30)

स आत्मनो वपामुदक्खिदत्तामग्नौ प्रागृह्णात् ॥

(थ्यथ्रीया समिथा कांडा 2, पहला अवतारा दूसरी हनसू, पृष्ठसंख्या : 62)

Sa ātmano vapāmudakkhidattāmagnau prāgṛhṇāt ||

Taittirīya-Samhitā (kanda 2, 1st Awathaar, 2nd Hanasu, Page No.3)

अर्थ: प्रजापति माध्य (ब्रह्मा) ने अपने ही शरीर को विस्मृति के रूप में अर्पित किया	बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। (इब्रानियों 9: 12-14)

प्रिय पाठकों हमे वैदिक युग के पापों की फिरौती के लिए पशु बलि और यीशु मसीह के बीच अपने पापों के लिए बलिदान के रूप में एक परिपूर्ण समानता नहीं मिलती है क्या ?

यीशु मसीह के बारे में पैगंबर मोहम्मद कहते हैं:

जो यह नहीं मानता है कि यीशु ईश्वर का दूत है, उसे मुस्लिम नहीं माना जा सकता है; और जो अपनी भविष्यवाणी को मानने से इनकार करता है, वह इस्लाम से बहिष्कृत होगा। पवित्र कुरान मे कई नामों में से एक मात्र महिला का नाम है, और वह यीशु की माँ मरियम है। पवित्र कुरान में माँ मरियम के जीवन रेखा को इस दुनिया के लिए मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया है। "मैं उसी की कसम खाता हूं जिसके हाथ में मेरा जीवन है। माँ मरियम का बेटा निश्चित रूप से एक धर्मी न्यायाधीश के रूप में आप पर शासन करने के लिए उतरने वाला है। पुनरुत्थान का क्षण तब तक नहीं आ सकता जब तक प्रभु यीशु दोबारा नहीं आता।"

यह पवित्र सत्यवेद का वाक्य पवित्र कुरान मे भी दाखिल हुआ है।

3. Al-i'Imran   عِمرَان آل سُوۡرَةُ   ٣

45: (وہ وقت بھی یاد کرنے کے لائق ہے) جب فرشتوں نے (مریم سے کہا)

کہ مریم خدا تم کو اپنی طرف سے ایک فیض کی بشارت دیتا ہے جس کا نام مسیح (اور مشہور)
عیسیٰ ابن مریم ہوگا (اور) جو دنیا اور آخرت میں باآبرو اور (خدا کے) خاصوں میں سے ہوگا

अर्थ: एक देवदूत ने कहा "हे मरियम, परमेश्वर ने तुम्हें अच्छी खबर दी है जो मरियम को पुत्र होगा उसका नाम यीशु होगा, वह स्वर्ग में से पृथ्वी पर उतारा जाएगा और उसे परमेश्वर का दूत बनाया जाएगा।"

47: مریم نے کہا پروردگار میرے ہاں بچہ کیونکر ہوگا کہ کسی انسان نے
مجھے ہاتھ تک تو لگایا نہیں فرمایا کہ خدا اسی طرح جو چاہتا ہے پیدا کرتا
ہے جب وہ کوئی کام کرنا چاہتا ہے تو ارشاد فرما دیتا ہے کہ ہوجا تو وہ ہو
جاتا ہے

अर्थ: वह बोली, "मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कहाँ से होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं?" स्वर्गदूत ने कहा, "ऐसा ही होगा, अल्लाह जो चाहता है, पैदा करता है। जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो उसको बस यही कहता है 'हो जा' तो वह हो जाता है।"

49: اور (عیسیٰ) بنی اسرائیل کی طرف پیغمبر (ہو کر جائیں گے اور کہیں گے) کہ میں تمہارے پروردگار کی طرف سے نشانی لے کر آیا ہوں وہ یہ کہ تمہارے سامنے مٹی کی مورت بشکل پرند بناتا ہوں پھر اس میں پھونک مارتا ہوں تو وہ خدا کے حکم سے (سچ مچ) جانور ہو جاتا ہے اور اندھے اور ابرص کو تندرست کر دیتا ہوں اور خدا کے حکم سے مردے میں جان ڈال دیتا ہوں اور جو کچھ تم کھا کر آتے ہو اور جو اپنے گھروں میں جمع کر رکھتے ہو سب تم کو بتا دیتا ہوں اگر تم صاحب ایمان ہو تو ان باتوں میں تمہارے لیے (قدرت خدا کی) نشانی ہے

अर्थ: और उसे इसराईल की संतान की ओर रसूल बनाकर भेजेगा। (वह कहेगा) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूँ कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी के रूप जैसी आकृति बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ, तो वह अल्लाह के आदेश से उड़ने लगती है। और मैं अल्लाह के आदेश से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूँ और मुर्दे को जीवित कर देता हूँ। और मैं तुम्हें बता देता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो। निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए एक निशानी है, यदि तुम माननेवाले हो।

55: اس وقت خدا نے فرمایا کہ عیسیٰ! میں تمہاری دنیا میں رہنے کی مدت پوری کرکے تم کو اپنی طرف اٹھا لوں گا اور تمہیں کافروں (کی صحبت) سے پاک کر دوں گا اور جو لوگ تمہاری پیروی کریں گے ان کو کافروں پر قیامت تک فائق (وغالب) رکھوں گا پھر تم سب میر ے پاس لوٹ کر آؤ گے تو جن باتوں میں تم اختلاف کرتے تھے اس دن تم میں ان کا فیصلہ کردوں گا

अर्थ: तब अल्लाह ने कहा, "ऐ ईसा! मैं तुझे अपने क़ब्ज़े में ले लूँगा और तुझे अपनी ओर उठा लूँगा और अविश्वासियों (की कुचेष्टाओं) से तुझे पाक कर दूँगा और तेरे अनुयायियों को क़यामत के दिन तक उन लोगों के ऊपर रखूँगा, जिन्होंने इनकार किया। फिर मेरी ओर तुम्हें लौटना है। फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीज़ों का फ़ैसला कर दूँगा, जिनके विषय में तुम विभेद करते रहे हो।"

6. प्रभु यीशु का पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण

सप्ताह के पहले दिन, कुछ स्त्रियां कब्र पे आयी जहाँ यीशु का शरीर रखा गया था। फिर वहाँ एक बहुत बड़ा भूकंप आया, स्वर्ग से उतरा एक स्वर्गदूत कब्र के प्रवेश द्वार से पत्थर को लुढ़काकर उसपर बैठ गया। स्वर्गदूत ने उनसे कहा "डरो मत, मुझे पता है, तुम यीशु की तलाश कर रहे हो, जिसे सूली पर चढ़ाया गया था। वह यहां नहीं है; जैसा उसने कहा था कि वह फिर से जीवित हो जायेगा, वह जीवित हुआ है। आओ और उस जगह को देखें जहां उसे रखा गया था।" फिर बाद में दिन में यीशु उनके सामने उपस्थित हुए और कहा "आपको शांति मिले।" शिष्य उसके आगे आए और उसके पैरों पर गिर पड़े। उसी दिन यीशु अपने अन्य शिष्यों को दिखाई दिया। उसने उन पर सांस फूंकी और कहा कि "जिनके पाप तुम क्षमा करोगे, वे उनके लिये क्षमा किए गए हैं; जिनके तुम रखोगे, वे रखे गए हैं" ।

तब यीशु के बारह शिष्यों में से एक थोमा वहाँ नहीं था। इसलिए, उन्होंने कहा "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के निशान नहीं देखता और अपनी उंगली उसके शरीर के छेद में रख नहीं देता, मुझे विश्वास नहीं होगा।" एक हफ्ते बाद जब उनके शिष्य घर में थे, और थोमा उनके साथ था। हालाँकि दरवाजे बंद थे, यीशु ने उनके बीच खड़े होकर कहा "आपको शांति मिले।" उसके बाद कहा क्यूं कष्ट कर रहे हो? तुम्हारे ह्रदय मे क्यूं शंका पैदा हो रही है? मेरे हाथ पैर छूकर देखो, तुम्हे जैसे प्रतीत होता है वैसे ही मुझे मांस और हड्डियां है, वह भूतों को नही होते, यह कहकर उनके पास रखे मछलीयों का टुकडा सेवन किया, और उन्होंने थोमा से कहा," अपनी उंगली यहाँ रखो; मेरे हाथ देखो। अपने हाथ मेरी शरीर के छेद में रखो, संदेह करना बंद करो और विश्वास करो। "थोमाने उससे कहा," मेरे स्वामी और मेरे परमेश्वर"।यीशु ने उस से कहा, "तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।" यह वही शिष्य है जो भारत आया था। यीशु मसीह का एक मजबूत गवाह होने के नाते, उसने तमिलनाडु और केरल में यीशु मसीह के शुभसमाचार का प्रचार किया। बाद में, उसकी हत्या कर दी गई, इस तरह वह हमारे भारत भूमि में यीशु मसीह के लिए शहीद हुआ और उसका गवाह बन गया।

चालीस दिनों की अवधि में पुनरुत्थान हुये यीशुने कई बार अपने शिष्यों को दर्शन दिया, और गलिलिया नामक गांव मे पर्वत पर रहते उनके शिष्योंने उसे देखकर प्रणाम किया, तब यीशु ने उनके पास आकर उनसे बात करते हुए कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उनको मुक्ति का मार्ग सिखाओ। विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जांए तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे। फिर लगभग पांचसौ लोगों की उपस्थिति में वह स्वर्ग में उठा लिया गया और पिता के दाहिने हाथ में जा बैठा। यहाँ से शिष्यों ने बाहर जाकर उसकी शिक्षाओं का प्रचार किया।

यीशु की कब्र को सरकार की मुद्रा लगा कर अभिभावक रखने के बाद भी, जैसे उसने पहले से ही कहा था कि वह कब्र में से उठा लिया गया, उसका मृत शरीर कब्र मे नहीं था। इसलिये उनके पुनरुथान के बारे मे अभी तक कोई भी उलझन नहीं है। आज दुनिया मृत यीशु को नहीं बल्कि उस यीशु को स्वीकार करती है जो मरे हुओं में से जी उठा है और हमेशा जीवित रहता है।

7. यीशु मसीह फिर वापस आयेगा (पुनरागमन)

यीशु का जब स्वर्गारोहण हो रहा था तब स्वर्ग दूतों ने उनके शिष्यों से कुछ बातें कही।

हे गलीली पुरूषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा। (प्रेरितों 1:9-11)

क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)

"मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।" "क्योंकि मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां उसके ही पास हैं।"

(मत्ती 16:27; प्रकाशित वाक्य 22:18)

इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएं, और वह दिन तुम पर फन्दे की नाईं अचानक आ पड़े। क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहने वालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आने वाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े होने के योग्य बनो। (लूका 21:34-36)

8. कौन हमें पापों से मुक्त कर सकता है?

प्राचीन काल से, भारत अपनी शानदार सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। हमारे ऋषि, प्रख्यात विचारक और दार्शनिक असाधारण रूप से उत्कृष्ट थे। बृहदारण्यकोपनिषद 3: 1 :28 में देखी गई सार्थ की प्रार्थना का एक उदाहरण इस प्रकार है –

असतो मा सद्गमय।	***Asato mā sadgamaya /***
तमसो मा ज्योतिर्गमय।	***tamaso mā jyotirgamaya /***
मृत्योर्मा अमृतंगमय।	***Mrityormā amritamgamaya /***
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः//	***Oṁ śhānti śhānti śhānti ḥ //***

इसका अर्थ: है कि मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो. मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो. मुझे मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता (भगवान) के पास नहीं पहुंच सकता। (युहन्ना 14: 6)

कृपया जाँचें कि क्या येशु मसीह जिसने उपरोक्त बयान दिया है, वह एक झूठा, धोखेबाज या पागल है या यह पढ़कर सच बता रहा है? आप अपने लिए यह फैसला करें।

9. पवित्र बाइबल का इतिहास।

"बाइबल" शब्द एक ग्रीक शब्द "बिब्लोस" से लिया गया है जिसका अर्थ है स्क्रॉल या किताबें। बाइबल 1600 से अधिक वर्षों की अवधि में 40 से अधिक लेखकों द्वारा लिखी गई है जो एशिया, यूरोप और अफ्रीकी महाद्वीपों से थे। पवित्र बाइबल के कुछ हिस्सों को मौखिक रूप से पारित किया गया था और बाद में, वे हिब्रू और ग्रीक भाषाओं में विभिन्न जानवरों की त्वचा, नरकटों के स्क्रॉल और पत्थर पर लिखे गए हैं। और ग्रीक का लेखन पैटर्न बाएं से दाएं है जब कि हिब्रू से बाएं से दाएं ने उन्हें एक पुस्तक के रूप में व्यवस्थित करना मुश्किल बना दिया। दुनिया के इतिहास में, बाइबल लैटिन भाषा में 1456 में पहली बार छपा था। वर्ष 1714 में, भारत में पहली बाइबल तमिल भाषा में छपी थी। बाइबल के हिंदी और उर्दु अनुवाद का इतिहास भारतीय अनुवादको के समक्ष हुआ है, जिन्होने देवनागरी और नस्तालिकई भाषा मे उनको लिखा है। पहिला हिंदी बाईबल बेंजामिन स्चुल्ज़े, एक जर्मन के मिशनरी ने साल 1689 से 1760 के बीच लिखा। और वह 1745 मे हाल्ले मे प्रकशित हुआ।

बाइबल की सभी किताबें एकता प्रदर्शन करती है और वैज्ञानिक, चारित्रिक पुरातत्व प्रवादनों की पूर्णता, और किसी और विषयों मे कोई भी खंडन या विरोध नही करती। इसमें दुनिया के शुरू से अंत तक मानव जाति के उद्धार से जुड़े मामले शामिल हैं। इसके अलावा वैज्ञानिक रूप से भी यह योग्य पाया जाता है। इस पुस्तक का संदेश व्यक्ति के जीवन को एक पुण्य में बदल देगा। यह पुस्तक सभी राष्ट्रों, सभी युगों की संस्कृति के लिए प्रासंगिक है। सभी शास्त्र ईश्वर की सांस हैं और धर्म में सुधार और प्रशिक्षण के लिए विद्रोह करना नहीं सिखाते हैं। परमेश्वर स्वयं इस के लेखक हैं। वर्तमान में, पवित्र बाइबल को 3000 से अधिक भाषाओं में वर्णित किया गया है, ताकि 95% लोग अपनी अपनी भाषा में बाइबिल पढ़ सकें।इसे चंद्र ग्रह पर भी सुरक्षित रखा गया है। प्रत्येक ईसाई परिवार के पास अपनी निजी बाइबल होती है। हर साल बाइबल सर्वश्रेष्ठ विक्रेतावाली किताब है।

भारतीय मुद्रा पर सम्राट अशोक के स्तंभ की एक छवि है, जिसने ईसा से लगभग 400 साल पहले शासन किया था; जिसके नीचे अथर्ववेद के मुंडकोपनिषद में घोषित सत्यमेव जयते का नारा है, इसका मतलब है कि सत्य ही प्रबल होगा या विजय प्राप्त करेगा। यदि यीशु एक भक्षक या धोखेबाज थे और उनके शब्द (शिक्षण) सत्य नहीं थे, तो वे निश्चित ही बने नहीं रहते। आज तक उनका शिक्षण दुनिया भर में है। मानव जाति के इतिहास में यीशु और उनके सत्यवेद का पालन करनेवाले अनुयायी बहुतायत में हैं। यह केवल वह पुस्तक है जो जाति, गत, पंत और धर्म के बावजूद हर कोई (दुनियाभर में) पढ़ रहा है, निस्संदेह पवित्र बाइबल है। मुझे लगता है, मैं यह कहने में अपनी सीमा से परे बात नहीं कर रहा हूं कि जो भी बाधाएं या यातनाए होती हैं, भले ही पृथ्वी और स्वर्ग नष्ट हो जाएं, उनका उपदेश कभी नहीं मिटेगा, क्योंकि वे सत्य हैं।

पवित्र सत्यवेद के प्रवचन के अनुसार जीनेवाला हर एक इंसान प्रेम, दया और बंधुत्व इन दैविक गुणों को अपने जीवन में उपयोग कर मुक्ति हासिल कर लेते है।फिर स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधीजी और मदर तेरेसा की तरह आदर्श व्यक्ति बनकर समाज को अपनी सेवा अर्पित करता है।

महात्मा गांधी की गवाही:

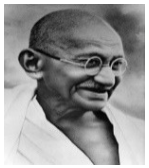

"मानव को मिले महान गुरु, प्रभु येशु है। भगवान के बहूत नजदीक होने का निदर्शन उनका जीवन ही है। भगवान के संकल्प और शक्ति का वर्णन उनकी तरह किसी और ने नही किया है। इसलिए वह भगवान के कुंवर है, यह मेरी सोच है|" **-महात्मा गांधी**

एक बार, जब गांधीजी को देख एक श्वेत (अंग्रेज) व्यक्ति ने पूछा कि "आपको भारत के लिए स्वतंत्रता कैसे मिलेगी।" उसने शांति से पवित्र बाइबल खोली और मत्ती अध्याय 5 से छंद दिखाया और उससे पूछा; क्या तुमने नहीं पढ़ा है "धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के वारिस होंगे।" नम्र होकार मैं भारत में

स्वतंत्रता क्यों नहीं ला सकता? उसी तरह हमारे देश ने येशु के वचन की और उनके जीवन का पालन किया और अहिंसा के माध्यम से ही स्वतंत्रता प्राप्त की। वरना और कई देश प्रेमियों को प्राणों की आहुति देनी पड जाती। इसी कारण गांधीजी को 'महात्मा' की उपाधि के साथ 'राष्ट्रपिता' भी कहा जाता है। और उनका चित्र हमारे देश के रूपये पर है.

जब महात्मा गांधी की हत्या हुई तब वह किसी भी देश के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति नहीं थे और उनके पास अपना घर भी नहीं था। उनके पास कोई बैंक खाता भी नहीं था, उनकी संपत्ति में कुछ कपड़े, एक जोड़ी चप्पलें और एक घड़ी थी। वह देखने में आकर्षक नहीं थे; जब एक बुजुर्ग व्यक्ति जिसे अर्धनग्न फकीर कहा जाता था, की हत्या कर दी गई तो संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में संयुक्त राष्ट्र भवन पर 55 देशों के राष्ट्रीय झंडे आधे झुका दिए गए और शोक व्यक्त किया गया। दुनिया में ऐसा सम्मान आज तक किसी को नहीं मिला. यह ऐसी बात है जिस पर हर भारतीय को गर्व हो सकता है, उनका जन्मदिन आज कई देशों में गांधी जयन्ती के रूप मे मनाया जाता है।

10. धनी आदमी और भिखारी लाजर का दृष्टांत।

एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल का वस्त्र पहिनता और प्रति दिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था। और लाझर नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उस की डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से वह अपना पेट भरे; वरन कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया; और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया। और अधोलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाई, और दूर से इब्राहीम की गोद में लाजर को देखा और उस ने पुकार कर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाजर को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगुली का सिरा पानी में भिगो कर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।

परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गढ़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके। उस ने कहा; तो हे पिता मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं, वह उन के साम्हने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएं। इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें।उस ने कहा; नहीं, हे पिता इब्राहीम; पर यदि कोई मरे हुओं में से उन के पास जाए, तो वे मन फिराएंगे। उस ने उस से कहा, कि जब वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तौभी उस की नहीं मानेंगे। (लूका 16:19-31)

11. यीशु मसीह कौन है? तुम्हारा निर्णय क्या है?

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों, जैसा कि मैंने पिछले पृष्ठों में उल्लेख किया है कि जो यीशु के बारे में सोचते हैं, क्या वह धोखेबाज, झूठा, पागल या सच्चा परमेश्वर है? यदि आप विश्वास करते हैं कि यीशु ही परमेश्वर है, तो आप भी उसी क्षण मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। मुक्ती प्राप्त करने के लिए, न तो कोई पुनर्जन्मों को पूरा करने की आवश्यकता है और न ही तीर्थ यात्रा पर जाने की; न तो स्वयं को दंड देने की जरूरत है और न ही दान के कामों की जरूरत है यह मोक्ष जाति या पंत, पुरुषों या महिलाओं के भेदभाव के बिना मुफ्त में प्राप्त किया जा सकता है। क्योंकि पवित्र बाइबल कहती है कि परमेश्वर चाहता है कि हर कोई मोक्ष या मुक्ति प्राप्त करे और सत्य का ज्ञान प्राप्त करे। उदाहरण के लिए, यीशु मसीह के साथ क्रूसपर चढ़ाये गये चोर को भी पश्चाताप करके ही उसी समय में स्वर्ग मिल गया।

यदि आप मोक्ष प्राप्त करना चाहते हैं, तो नीचे दी गई प्रार्थना करे।

"हे प्रभु यीशु, तू जो अनुग्रह और दया का धनी है इस दुनिया से हमें सत्य का ज्ञान, मुक्ति प्रदान करने के लिये आने के लिए और वह हमे बताने के लिये धन्यवाद। मैं स्वीकार करता हूं कि मैं एक पापी मनुष्य हूं और मानता हूं कि आप पवित्र परमेश्वर हैं और हमारे पापों के कारण आप क्रूस पर मारे गए। मेरे सारे हृदय से मैं आप पर विश्वास करते हुए मैं यह स्वीकार करता हूं कि आप सच्चे परमेश्वर हैं जो मेरे खातिर कलवरी सूली पर मारे गए, गाड़े गए, और तीसरे दिन फिर से मुर्दों में से जीवित हो गए। यह मै पूर्ण हृदय से विश्वास करता हूँ कि आप ही केवल महिमा के योग्य है ये मैं मेरे मुँह से अंगीकार करता हुं। मेरे पापों को क्षमा करने के लिए और जीवन की पुस्तक में मेरे नाम को शामिल करने के लिए धन्यवाद। मुझे विश्वास है कि आप मुझे स्वर्ग में ले जाओगे"।

उन लोगों को बधाई जो पृष्ठ संख्या: 13 में वर्णित स्वर्गीय राज्य के अधिकारी होने के लिए बाध्य हैं। धन्यवाद !

12. हमें येशु मसीह की बताई हुई बातों पर क्यों विश्वास करना चाहिये

यीशु मसीह कोई काल्पनिक व्यक्ति नहीं हैं; वह एक ऐतिहासिक और यथार्थ व्यक्ति थे, जिनके इस पृथ्वी पर आगमन के अनेक प्रमाण और आधार हैं। चरित्र मे उस के जैसा प्रभाव किसी ने नही डाला है। उसके खून से भरा हुआ कपड़ा अभी भी लंदन के संग्रहालय में सुरक्षित है। वैज्ञानिक परीक्षण की श्रृंखला के बाद, यह पुष्टि की गई है कि कपड़ा स्वयं यीशु का है। वह हमारे एशिया महाद्वीप में जन्मा है। यीशु के बारह शिष्यों में से दो संतो ने भारत का दौरा किया है, यीशु के जन्म ने इतिहास को दो अवधियों में विभाजित किया; ईसा पूर्व और इस वी सन अन्नो डोमिनि यानि (प्रभु के वर्ष में)। इसलिये और नीचे दिये हुए कारणों से वह सत्य ही बोल रहा है यह विश्वासनीय है।

1. प्रभु यीशु का व्यक्तित्व अद्वितीय और सबसे पवित्र है
(देखें पृष्ठ संख्या 33)
2. यीशुने उपदेशक के रूप में जीवन जिया। इसलिए, उनका शिक्षण पूरी दुनिया में फैल गया है। (पेज नंबर 35 देखें)
3. यीशु के पास प्रकृति, बुरी आत्माओं और मृत्यु पर अधिकार है। उन्होंने कई चमत्कार किए और चिन्ह दिखाये । (देखें पृष्ठ संख्या 39)
4. यीशु के वचन और काम अधिकार से भरे हुए थे। यहां तक कि क्रूस पर छह घंटे की पीड़ा को सहते हुए भी, अपनी मानसिक शांति को खोए बिना, उन्होंने सात वाणियाँ बोली, जो एक पागल व्यक्ति के लिए संभव नहीं होगा। (पेज नंबर 53 देखें)
5. इस लिए हम किसी भी कीमत पर यह नहीं कह सकते कि वह पागल हो सकता है । अड़चनें, उत्पीड़न और विरोध हों, लेकिन उनकी सेवकाई बंद नहीं हुई ना कभी होगी। (पेज नंबर 54 देखें)
6. मनुष्य पवित्र बाइबल की शिक्षाओं पर विश्वास और उसका पालन करके दिव्यज्ञान प्राप्त करेगा। (पेज नंबर 64 देखें)

यीशु के जन्म के संबंध में, पवित्र बाइबल कहती है, एक कुँवारी लड़की को गर्भ धारण करना और उसे सहन करना होगा, इसलिए पवित्र कुरान के दस्तावेज़ निम्नानुसार हैं:

~*~*~*~*~*~

अध्याय 13 से 20 अनेक दैनिक पत्रिकाए राज्यभर मे प्रचार हुए, लेखन हुए और आपको समझाने के लिये इस पुस्तक मे लाये गये है।

दि: 25-12-2012 शिवमोग्गा के स्थानिक पत्रिका मे प्रकट हुआ लेखन।

13. यीशु मसीह ही पवित्र परमेश्वर है।

"प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर थे, और हमें उन्हें परमेश्वर के रूप में मानव अभिव्यक्ति यीशु मसीह की आराधना करनी चाहिए। आप परमेश्वर की अभिव्यक्ति से बढ़कर किसी चीज की पूजा नहीं कर सकते। जब भी आप एक परमेश्वर को मसीह से परे बनाने का प्रयास करते हैं, तो आप पूरी चीज को मार देते हैं।" **- स्वामी विवेकानंद**

(कृति श्रेणी के प्रवचन पृष्ठ संख्या-7: पा.सं: 331)

पवित्र बाइबल में घोषित रूप से यीशु की पवित्रता जो हमारे बीच में डेरा किया इस प्रकार है:

- **प्रभु के दूत ने यीशु के जन्म के संदर्भ में कुंवारी मरियम से बात की थी।**

  स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह **पवित्र जो उत्पन्न** होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। (लूका 1:35)

- **यीशु पूर्ण मानव रूप में पैदा होकर 33½ वर्ष लोगों के बीच रहे।**

  वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी **निष्पाप निकला।**

  (इब्रानियों 4:15)

- **जब लोगों ने यीशु की गलती खोजने की कोशिश की, तो उन्होंने कहा:**
  तुम में से कौन मुझे **पापी ठहराता है?** (यूहन्ना 8:46)

- **प्रत्येक धर्मशास्त्र कहता है कि पाप की मजदूरी मृत्यु है और बिना रक्तपात के कोई मुक्ति नहीं है।**

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पापी ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (2 कुरिन्थियों 5:21)

- **जब बैल और बकरियों के खून से मानव के पापों को साफ़ करना असंभव हो गया**, हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात **अपराधों की क्षमा**, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।

  (इफिसियों 1: 7)

- **12 शिष्यों में से एक यहूदा को एहसास हुआ कि उसने 30 चांदी के सिक्के के लालच मे येशु को पकड्वाने के बाद, पश्चाताप से कहा:**
  मैं ने **निर्दोषी** को घात के लिये पकड़वा कर पाप किया है। (मत्ती 27:4)

- "**जब सैन्हेद्रिन, यहूदी धार्मिक सर्वोच्च संस्थानो ने एक जांच करने के लिए मुलाकात की-**"
  महायाजक और सारी महासभा यीशु के मार डालने के लिये उसके विरोध में गवाही की खोज में थे, **पर न मिली।** क्योंकि बहुतेरे उसके विरोध में झूठी गवाही दे रहे थे, पर उन की गवाही एक सी न थी। (मार्क 14: 55-56)

- "पीलातुस गवर्नर ने कहा" तुम इस मनुष्य को लोगों को बहकाने वाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे सामने उस की जांच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैं ने उस में कुछ भी दोष नहीं पाया है। न हेरोदेस ने, क्योंकि तभी उसने यीशु को हमारे पास लौटा दिया है: (लूका 23: 14,15)

- पीलातुस ने मुख्य पुजारी और भीड़ से कहा की: **मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता।** (लूका 23: 4)

- जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था तो उस की पत्नी ने उसे कहला भेजा, कि तू उस **धर्मी** के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है। (मत्ती 27:19)

- **यीशु के साथ सूली पर चढ़ाये गए दो चोरों में से एक ने यीशु से कहा:**
  हम तो न्यायानुसार दण्ड पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का ठीक फल पा रहे हैं; **पर इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया।** (लूका 23:41)

- **येशु मसीह के क्रूस की देख रेख करनेवाले सूबेदारने कहा:** निश्चय यह मनुष्य **धर्मी** था। (लूका 23:47)

- **3½ वर्षों से येशु के साथ रहकर, 12 शिष्यों में से एक पतरस ने गवाही देते कहा: -**
  और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके पद चिन्ह पर चलो। **न तो उसने पाप किया**, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली।
  (1 पतरस 2: 21,23)

यीशु मसीह अपने जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान में पूरी तरह से पवित्र है। यहां तक कि आज तक, किसीने भी उसमें एक भी गलती नहीं पाई है। क्या ईश्वर को ऐसा नहीं होना चाहिए? उसकी तुलना किस के साथ की जा सकती है? सच मे उसकी तरह कोई दूसरा नही हैं ।

17-03-2013 में "राज्य दैनिक समाचार पत्र"
सम्युक्त कर्नाटक में प्रकाशित एक लेख।

14. यीशु मसीह के पहाड़ी उपदेश का सारांश।

देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक 'सत्य के साथ मेरा प्रयोग' में कहा कि जब उन्होंने पवित्र बाइबल से पहाडी उपदेश पढ़ा, तो यह उनके दिल को गहरा स्पर्श लगा, उनकी शिक्षाएं केवल ईसाइयों तक ही सीमित नहीं लेकिन प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। यहां पहाडी उपदेश का सारांश दिया गया है, जिसने गांधीजी को प्रभावित किया था और उन्हें अहिंसा को अपनाने के लिए भारत को स्वतंत्र बनाने का मतलब बताया।

धन्य कौन हैं और उन्हें क्या मिलता है?

धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है॥

धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे॥

धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे॥

धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं,

क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे॥

धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी॥

धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे॥

धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं,

क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे॥

धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं,

क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है॥

मानव का जीवन कैसा होना चाहिये।

यीशु ने जैसा प्रचार किया उसी प्रकार जीवन जीये :

- तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।
- तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु। दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके।
- यदि तेरी दाहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
- बुरे का सामना न करना; तेरा दुश्मन रास्ते पर होते समय ही उसके साथ सुलाह कर लेना, नही तो तू कारवास मे डाला जायेगा। जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उस की ओर दूसरा भी फेर दे। जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़।

- अपने दुश्मनों से प्यार करो, उन लोगों के लिए प्रार्थना करो जो तुम्हें सताते हैं, उन लोगों की मदद करो जो तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं। तुम्हे श्राप देने वालों को आशीर्वाद दो। ऐसा करने से तुम स्वर्गवासी प्रभु के बच्चे बनोगे।
- अगर आप उनसे प्यार करते हैं जो आपसे प्यार करते हैं, तो आपको क्या इनाम मिलेगा? क्या शोषक भी ऐसा नहीं कर रहे हैं? परमेश्वर भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धमिर्यों और अधमिर्यों दोनों पर मेंह बरसाता है।
- सावधान रहो कि आपके द्वारा किये जानेवाले धार्मिक कार्य लोगों को दिखाने के लिए ना करो। यदि आप करते हैं, तो आपको स्वर्ग में अपने पिता से कोई इनाम नहीं मिलेगा। लेकिन जब आप जरूरतमंदों को देते हैं, तो अपने बाएं हाथ को यह न जानने दें कि आपका दाहिना हाथ क्या कर रहा है जब तुम प्रार्थना करो, अपने कमरे में जाओ, दरवाजा बंद करो और अपने पिता से गुप्त में प्रार्थना करो।
- अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीडे खाते है, और न काई बिगाड़ते हैं, और चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।
- कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। आप परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। कोई भी छात्र अपने शिक्षक से ऊपर नहीं है, लेकिन हर कोई जो पूरी तरह से प्रशिक्षित है, वह अपने शिक्षक की तरह होगा।
- जब अच्छा कार्य करने की आप में शक्ति हो तो उन लोगों से अच्छाई करने को न रुको जो इसके लायक हैं। जब आपके पास वह हो जो दिया जाना है, तो अपने पड़ोसी से यह न कहें कि "बाद में आना अभी लौट जाओ।"
- जब कोई आपको दावत के लिए आमंत्रित करता है, तो सम्मान की जगह न लें, वह जगह आपसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए हो सकती है। मेजबान जिसने आप दोनों को आमंत्रित किया है, वह आकर आपसे कहेगा, 'इस आदमी को अपनी जगह दे दो'। तब आपको अपमानित होना पड़ेगा, आपको कम से कम महत्वपूर्ण स्थान लेना होगा। बल्कि जब आपको आमंत्रित किया

जाता है, तो सबसे कम महत्वपूर्ण जगह लें, ताकि जब आपका मेजबान आए, तो वह आपसे कहेगा, "दोस्त, एक बेहतर जगह पर बैठे" तब आपको अपने सभी साथी मेहमानों की उपस्थिति में सम्मानित किया जाएगा। हर उस व्यक्ति के लिए जो खुद को ऊँचा उठाता है, वह दीन किया जाएगा और वह जो खुद को दीन करता है वह ऊंचा हो जाएगा।

- दूसरों का न्याय न करें और आपका भी न्याय नहीं किया जाएगा? क्या एक अंधा दूसरे अंधे को रास्ता दिखा सकता है? क्या वे दोनों गड्ढे में नहीं गिरेंगे? "आप पाखंडी हैं, पहले लट्ठे को अपनी आंख से बाहर निकालें, और फिर आप अपने भाई की आंख के तिनके को हटा पाएंगे"।
- क्षमा करें, तो आपको भी क्षमा कर दिया जाएगा, दूसरों से वह व्यवहार करें जो आप उनसे उम्मीद करते हैं कि वे आपसे करेंगे।
- हर कोई जो कहता है, "परमेश्वर, परमेश्वर" वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे, लेकिन केवल वह जो मेरे पिता जो स्वर्ग में है उसकी इच्छा पुरी करता है इसलिए, जो कोई भी मेरे शब्दों को सुनता है और उन्हें व्यवहार में लाता है, वह एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया है।
- आप में से कौन चिंता करके, अपने जीवन में एक घंटा जोड़ सकता है कोई नहीं। प्रभु जानता है, आपको क्या चाहिए। आकाश के पक्षियों को देखो, वे न तो बोते हैं और न ही काटते हैं ना खलिहान में बटोरते हैं, और फिर भी तुम्हारे स्वर्गीय पिता उन्हें खाना खिलाते हैं। क्या आप भी उनसे अधिक मूल्यवान नहीं हैं? पहले स्वर्ग और धार्मिकता के राज्य की तलाश करो, और ये सारी चीजें तुम्हें भी दी जाएंगी।

प्रार्थना कैसे करें?

"हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग मे पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो, हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे, और जैसे हम अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं वैसे ही आप हमारे अपराधों को क्षमा करें, और हमें परीक्षा में मत डाल, परन्तु दुष्ट से बचा। क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं।" "आमीन।"

02-04-2013 को पावना शिवमोग्गा स्थानीय दैनिक पत्र में प्रकाशित एक लेख।

15. यीशु मसीह के द्वारा किए हुए महत्वपूर्ण ३७ चमत्कार

2024 से पहले प्रमाणित किए गए महत्वपूर्ण तथ्य कि ईसा मसीह इस दुनिया में पैदा हुए थे और इस धरती पर लोगों के बीच 33 ½ वर्ष रहते थे। उनके 3 ½ वर्षों के सेवा के जीवन के दौरान किए गए उनके 37 महत्वपूर्ण चमत्कार पवित्र बाइबल में दर्ज हैं।

1. काना में एक विवाह समारोह के दौरान, दाख-रस समाप्त हो गया था, यीशु ने छह पत्थर के घड़ों में पानी भरवाया। हर घड़े में दो से तीन मटके आ सकता था। इसके बाद, यीशु ने पानी को दाख-रस में बदल दिया। (यूहन्ना 2: 1-11)
2. काना में शाही अधिकारी का बेटा बीमार पड़ गया और उसी क्षण यीशु ने उससे कहा, 'तुम जा सकते हो, तुम्हारा बेटा जीवित रहेगा' वह चंगा हो गया हैं। (यूहन्ना 4: 43-54)
3. आराधनालय में बुरी आत्मा से ग्रस्त एक व्यक्ति यीशु मसीह को पुकारता है, 'क्या तुम हमें नष्ट करने आए हो? मुझे पता है कि तुम परमेश्वर के पवित्र पुत्र हो। यीशु ने सख्ती से कहा, 'उसके शरीर से बाहर आओ'। तब बुरी आत्मा ने बिना किसी नुकसान के आदमी को छोड़ दिया। (लूका 4: 31-36)
4. जब यीशु पतरस के घर में आया, तो उसने देखा कि पतरस की सास बुखार के कारण बिस्तर पर पड़ी है। फिर जिस क्षण उसने उसके हाथ को छुआ, बुखार ने उसे छोड़ दिया। (मत्ती 8:14-15)
5. जब शाम हुई, तो बुरी दुष्ट आत्मा के अधीन कुछ व्यक्ति और बीमार लोगों को यीशु के पास लाया गया, और उसने एक आदेश पर दुष्ट आत्माओं को बाहर निकाल दिया और सभी बीमारों को चंगा किया। (मत्ती 8:16-17)
6. जब एक मछुआरा, जिसका नाम था पतरस, जो पूरी रात मछली पकड़ रहा था, कोई मछली पकड़ नहीं सका था तो वह निराश हो गया। उसके बाद यीशु मसीह उसके नाव पर खड़ा हुआ और लोगों को उपदेश दिया, उनके आदेश पर पतरस ने अपना जाल डाला और बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ी गईं। (लुका 5: 1-7)

7. जब यीशु को कुष्ठ रोग से पीड़ित एक व्यक्ति ने देखा तो अपने चेहरे के साथ जमीन पर गिरा और भीख मांगी, 'प्रभु अगर तुम चाहो तो मुझे शुध्द कर सकते हो।' तब यीशु ने उसके हाथ को छूकर उस आदमी को देखा और कहा, 'मैं तैयार हूँ शुध्द हो जा' तुरंत ही कुष्ठ रोग ठीक हो गया। (लूका 5: 12-13)
8. एक सूबेदार यीशु के पास आया और उसने कहा, प्रभु मेरा नौकर घर पर लकवाग्रस्त हुआ है और मैं इस लायक नहीं हूँ कि तुम मेरी छत के नीचे आओ। लेकिन सिर्फ शब्द कहो, और मेरा नौकर चंगा हो जाएगा। यीशु ने उससे कहा, 'जाओ, जैसा तुम्हारा विश्वास हैं वैसा ही हो जाएगा।' और उसका नौकर उसी वक्त चंगा हो गया। (मत्ती: 8:5-13)
9. यीशु मसीह उस लकवाग्रस्त व्यक्ति की ओर देखा, जो वहाँ लाया गया था और कहा कि अपनी खाट उठा और चल फिर और व ह आदमी उठकर चलने लगा । (मत्ती 9: 2-8)
10. यीशु मसीह ने एक आदमी का सूखा हुआ हाथ देखा और उस आदमी से कहा, 'अपना हाथ बढा और उसने अपना हाथ बढाया और उसका हाथ पूरी तरह से ठीक हो गया। (मरकुस 3: 1-6)
11. जब एक विधवा के इकलौते बेटे की मृत्यु हुई, तो प्रभु यीशु को दया आई और उसने ताबूत को छूकर कहा, हे युवक, तुम से कहता हूं, उठो। मरा हुआ आदमी उठ बैठा और बातें करने लगा। (लूका 11:1-17)
12. एक भयंकर तूफान आया, और लहरें नाव पर टूट पड़ीं, जिससे वह लगभग बहगई। यीशु ने तूफान को झिड़क दिया और लहरों से कहा, "शान्त हो जा" फिर हवा पूरी तरह से शांत हो गयी। (मरकुस 4: 35-41)
13. गेरासेनियो के क्षेत्र में एक अशुद्ध आत्मा वाला एक व्यक्ति कबरो में रहता था। जब उसने यीशु को दूर से देखा, तो वह दौड़ा और उसके सामने अपने घुटने टेक दिये और कहा, 'यीशु, परमप्रधान के पुत्र, कसम खाओ कि तुम मुझे तकलीफ नहीं दोगे।' यीशु ने कहा, "इस आदमी से बाहर आओ, तुम अशुद्ध आत्मा हो।" तब उस व्यक्ति को अशुद्ध आत्माओ की सैन्य से मुक्त किया गया और उसे सही पाया गया। (मरकुस 5: 1-20)

14. बारह साल तक खून बहने वाली एक महिला भीड़ में यीशु के पीछे आई और उसके कपड़ों को छुआ और सोचा कि अगर मैं उसके ड़ों को छूऊंगी तो मैं ठीक हो जाऊंगी, तुरंत उसका खून बहना बंद हो गया। (मरकुस 5: 25-34)

15. जब यीशु बात कर ही रहा था, तब कुछ लोग याईर के घर से आए, जो आराधनालय का अगुआ था। "आपकी बेटी मर चुकी है," उन्होंने कहा। "आप अब प्रभु को क्यों परेशान करते हो?" जब वे आराधनालय के सरदार के घर आए, तो यीशु ने देखा, लोग रो रहे थे और जोर से चिल्ला रहे थे। उसने उस लड़की का हाथ पकड़ा और उससे कहा, "तल्लीता कूमी!" (जिसका इब्रानी अर्थ है "छोटी लड़की, मैं तुमसे कहता हूं, उठो!") तुरंत लड़की खड़ी हो गई और घूमने लगी (वह बारह वर्ष की थी। इस पर सब पूरी तरह से चकित थे। (मरकुस 5: 35-43)

16. जब यीशु वहाँ से आगे बढ़ा, तो दो अंधे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले आए, "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर। तब उसने उनकी आँखें छूकर कहा, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो और उनकी आँखें खुल गई।" (मत्ती 9: 27-30)

17. जब वे बाहर जा रहे थे, तब लोग एक गूँगे को जिसमें दुष्टात्मा थी उसके पास लाए। और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा। (मत्ती 9:32-33)

18. बैतहसदा कुण्ड के पास एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था। यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और यह जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा, "क्या तू चंगा होना चाहता है? तब फिर यीशु ने उससे कहा, "उठ, अपनी खाट उठा और चल फिर।" वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा। (यूहन्ना 5: 1-9)

19. यीशु के पीछे एक बड़ी भीड़ थी। (वह लग्भग 20,000 लोग थे) उसने उन पर दया की और उसने बीमारों को चंगा किया। जैसे ही शाम हुई, यीशु ने पाँच रोटी और दो मछलियाँ ले ली और स्वर्ग की ओर देखा और धन्यवाद दिया और रोटियां तोड़कर लोगों को दीं। वे सभी खा कर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों की बारह टोकरियाँ बच गईं। खाने वालों की संख्या महिलाओं और बच्चों के अलावा केवल पुरुष ही लगभग पाँच हज़ार थे। (मत्ती 14: 13-21)

20. सुबह के चार बजे जब उनके शिष्य नाव पर सवार थे, रात के समय, जब नाव समुंदर में थी, एक तेज़ तूफ़ान आया और नाव डूबने की स्थिति में थी। तब यीशु पानी पर चलते हुए उनके पास आए। शिष्यों ने जब यीशु को देखा, तो वे डर गए, और उन्होंने सोचा कि वह कोई भूत है। यीशु ने तुरंत उन्हें सांत्वना दी और कहा, "डरो मत, यह मैं हूं।" तब पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि यह आप हैं तो मुझे पानी पर आने के लिए कहें।" यीशु ने उत्तर दिया, "आओ।" पतरस नाव से उतरकर पानी पर चलने लगा। (मत्ती 14:22-33)

21. जब यीशु और उसके चेले गन्नेसरत पर उतरे, तो वहाँ के लोगों ने यीशु को पहचान लिया, और उन्होंने यह बात पूरे देश में भेज दिया लोग अपने सभी बीमार मनुष्य को उसके पास लाने लगे और उसने उन्हें चंगा कर दिया, बीमार उसके कपड़े के किनारे को छूते थे, और बिलकुल ठीक हो जाते थे। (मत्ती 14: 34-36)

22. एक महिला जिसकी छोटी बेटी में एक दुष्ट आत्मा थी, आकर उसके चरणों में गिर गई। महिला एक यूनानी थी, जिसका जन्म सीरिया के फेनिशिया में हुआ था। उसने यीशु से अपनी बेटी के भीतर की दुष्ट आत्मा को निकलने की विनती की। यीशु ने कहा, "आप जा सकते हैं, शैतान ने आपकी बेटी को छोड़ दिया है, और उसने घर जाकर अपनी बच्ची को बिस्तर पर पड़ा पाया, जो दुष्ट आत्मा से मुक्त की गई थी।" (मरकुस 7: 24-30)

23. कुछ लोग यीशु के पास एक ऐसे व्यक्ति को ले आए जो बहरा और बोलने के लिए हकलाता था, और उन्होंने उससे उस आदमी पर हाथ रखने के लिए विनती की। यीशु ने अपनी उंगलियाँ उस आदमी के कान में डाल दीं। फिर उसने थूक लगाया और उसके जीभ को छुआ। उसने स्वर्ग की ओर देखा और गहरी आह भरते हुए उससे कहा, "इफ्फाथा!" (जिसका अर्थ है, "खोला जाए) इस पर, आदमी के कान खुल गए, उसकी जीभ को ढीला कर दिया गया और वह स्पष्ट रूप से बोलने लगा।" (मरकुस 7: 31-37)

24. यीशु उस भीड़ पर दया करते हैं, जो तीन दिनों से भूखे पेट उसके पीछे थी। वह उन्हें भूखा नहीं जाने देना चाहता था। इसलिए, उसने सात रोटियाँ और

कुछ छोटी मछलियाँ लीं, धन्यवाद करके तोड़ दिया और भीड़ को खिलाने के लिए शिष्यों को दिया। वे लगभग 4000 पुरुष थे, जिनमें महिलाएँ और बच्चे भी थे। सभी खा कर संतुष्ट होने के बाद बचे हुए टुकड़ों से सात टोकरियाँ भरी हुयीं थी। (मत्ती 15: 32-39)

25. बेत्सैदा के कुछ लोग एक अंधे आदमी को ले आए और यीशु को उसे छूने के लिए विनंती करने लगे, उसकी आँखों पर थूकने के बाद उसने उस पर हाथ रखा और उससे पूछा: "क्या तुम कुछ देखते हो?" उसने ऊपर देखा और कहा, "मैं लोगों को देखता हूं, वे पेड़ों की तरह घूमते हैं यीशु ने एक बार फिर उस आदमी की आँखों पर हाथ रखा, तब उसकी आँखें खुली, उसकी दृष्टि बहाल हो गई, और उसने सब कुछ स्पष्ट रूप से देखा।" (मरकुस 8: 22-26)
26. यीशु ने एक व्यक्ति को देखा, जो अंधा पैदा हुआ था। उसने जमीन पर थूक दिया और लार के साथ कुछ मिट्टी सानी और उसे आदमी की आंखों पर लगा दिया और उससे कहा कि "जाओ" और शिलोह के कुंड में धो लो। उसने जाकर अपनी आखें धोयी और देखता हुआ घर आया। (यूहन्ना 9: 1-7)
27. एक मनुष्य यीशु के पास आया और उसके सामने घुटने टेक कर कहने लगा, 'प्रभु मेरे बेटे पर दया करो, उसे दौरे पड़ते हैं और उसे बहुत पीड़ा होती है। "यीशु ने दुष्ट आत्मा को फटकार लगाई, और वह लड़के के शरीर से बाहर आ गयी, और वह उसी क्षण से ठीक हो गया। (मत्ती 17: 14-21)
28. यीशु ने पतरस से कहा, "झील में जाओ और अपना अंकुड़ा बाहर निकालो। जो पहली मछली निकले उसका मुंह खोलने के बाद तुम्हें एक चांदी का सिक्का मिलेगा उसे ले कर मेरे और अपने 'कर' के बदले उन्हें दे दो।" (मत्ती 17:24 -27)
29. तब वे लोग एक व्यक्ति को उसके पास पास ले आए जो अंधा और गूंगा था, और यीशु ने उसे चंगा किया, ताकि वह बात कर सके और देख सके। (मत्ती 12:22)
30. इस तरह एक महिला थी जो अठारह साल से एक दुष्ट आत्मा से कुबडी थी। वह मुड़ी हुई थी और बिल्कुल भी सीधी नहीं हो पा रही थी। जब यीशु ने उसे देखा, तो उसने उसे आगे बुलाया और उससे कहा, "महिला, आप अपनी

दुर्बलता से मुक्त हो गई हो," फिर उसने अपने हाथों को उस पर रख दिया, और तुरंत वह सीधी हो गई और प्रभु की प्रशंसा की। (लूका 13: 10-13)

31. एक जलोदर से पीड़ित व्यक्ति यीशु के सामने आया। आदमी को पकड़कर यीशु ने उसे चंगा किया और उसे विदा किया। (लूका 14: 1-4)
32. जब यीशु एक गांव के पास पहुंचते हैं, तो दस लोग जो कुष्ठ रोग से पीड़ित थे, उन्हें देखकर वे यीशु से दया की विनती करते हैं। वे ऊँची आवाज़ में कहते हैं, "यीशु, स्वामी, हम पर दया करो!" यीशु ने उन्हें देखा और कहा, "तुम जाओ और अपने आप को याजकों को दिखाओ।" जैसे ही वे याजकों के पास जाने लगे, वे रास्ते में ही ठीक हो गए और उनका कुष्ठ रोग दूर हो गया। (लूका 17: 11-19)
33. यीशु के प्रिय लाज़र को मृत घोषित कर दिया गया था और वह चार दिनों से कब्र में था। जब उसने उसके बहनों को रोते देखा, तो वह भी रोया। यीशु उसके परिवार के साथ लाज़र की कब्र पर गए और ज़ोर से आवाज़ दी, "लाज़र, बाहर आओ!" मरा हुआ लाज़र बाहर आया। यीशु ने उनसे कहा, "कब्र के कपड़े उतारो और उसे जाने दो।" (यूहन्ना 11: 1-44)
34. फिर वे यरीको आये और जब यीशु अपने शिष्यों और एक बड़ी भीड़ के साथ यरीहो को छोड़ कर जा रहा था, तो बरतिमाई नाम का एक अंधा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था।जब उसने सुना कि वह नासरी यीशु है, तो उसने ऊँचे स्वर में पुकार पुकार कर कहना शुरु किया, "दाऊद के पुत्र यीशु, मुझ पर दया कर।" तब यीशु रुका और बोला, "उसे मेरे पास लाओ।" फिर यीशु ने उससे कहा, "तू मुझ से अपने लिए क्या करवाना चाहता है?" अंधे ने उससे कहा, "हे रब्बी, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।" तब यीशु बोला, "जा, तेरे विश्वास से तेरा उद्धार हुआ।" फिर वह तुरंत देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया। (मरकुस 10: 46-52)
35. जब यीशु अपने शहर में वापस आ रहा था और सड़क पर एक अंजीर के पेड़ को देखा और वह उसके पास गया, लेकिन पत्तियों के अलावा उस पर कुछ भी नहीं पाया। फिर उसने उससे कहा, "अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे!" तुरंत पेड़ मुरझा गया। (मत्ती 21: 18-19)

36. जब यहूदा यीशु के साथ विश्वासघात करने के लिए आया, तो यीशु के शिष्यों में से एक ने महायाजक के नौकर के कान पर अपनी तलवार मारी। तब येशू ने उसे कहा "तुम्हारी तलवार म्यान मे डाल दो क्योंकि जो कोई तलवार पकडेगा वह तलवार से ही मरेगा।" यह कह कर येशू ने उस आदमी के कान को छुआ और उसे चंगा किया। (लूका 22:47-51)

37. परमेश्वर के वचन की घोषणा करते हुए यीशु के चेले वापस मछली पकड़ने चले गए। उस रात वे एक भी मछली नहीं पकड सके। अगले दिन सुबह पुनर्जीवित यीशु ने उन्हें दर्शन दिए और उन्हें बुलाया, पूछा, "क्या आपको कोई मछली नहीं मिली?" उन्होंने उत्तर दिया, "नही प्रभु" । यीशु ने कहा कि नाव के दाईं ओर अपना जाल डालें, जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होने बड़ी संख्या में मछलियों को पाया उन मछलियों की वजह से जाल फट जा रहे थे।"
(यूहन्ना 21: 1-14)

"इनके अलावा, यीशु ने और भी कई काम किए। यदि उनमें से हर एक को लिखा जाए, तो मुझे लगता है कि यहां तक कि पूरी दुनिया में उन किताबों के लिए पर्याप्त जगह नहीं होगी जो लिखी जाएंगी " (यूहन्ना 21:25)

यीशु मसीह ने कहा, "मैं तुम्हें सच्चाई बताता हूँ, जिस किसी को भी मुझ पर विश्वास है, तो वह वही करेगा जो मैं कर रहा हूँ, वह इनसे भी बड़ी चीज़ों को करेगा और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे मैं करूँगा।(यूहन्ना14:12-13)

परमेश्वर सर्वव्यापी, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान होना चाहिए। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं होना चाहिए। यीशु मसीह ने सभी प्रकार के चमत्कार किए हैं, प्रकृति पर, दुष्टात्मा पर, मरण पर और शरीर कि दुविधाओं पर अपना अधिकार प्रदर्षित किया। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं था, क्योंकि वह परमेश्वर है, हम उसकी प्रशंसा करें और उसकी आराधना करें।

विजय कर्नाटक में प्रकाशित एक लेख,
दिनांक 04-04-2013 को एक राज्य समाचार-पत्र।

16. व्यभिचार में फंसी एक महिला को फैसले के लिए यीशु के पास लाया गया।

"लेकिन इस लाभ को चिह्नित करें; सदियों और चले जाते हैं, तौभी जो शक्ति उस ने जगत पर छोड़ी है, वह अब तक नहीं फैली है, और न ही अब तक पूरी तरह खर्च की गई है। युगों के बीतने के साथ-साथ यह नया जोश बढ़ता जाता है। 'किसी ने कभी भी परमेश्वर को नहीं देखा, परन्तु पुत्र के द्वारा हम देख सकते हैं।' और यह सच है। कि हम परमेश्वर को पुत्र में छोड़कर कहां देखेंगे?"
- स्वामी विवेकानंद (क्रति श्रेणि, प्रकाशन-7, प्रवचन सारांश पा. सं.136)

भोर में यीशु फिर से मंदिर के दरबार में उपस्थित हुए; जहां सभी लोग उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए, और वह उन्हें पढ़ाने के लिए बैठ गया। कानून और फरीसियों के शिक्षक व्यभिचार में फंसी एक महिला को ले आए। उन्होंने समूह के सामने अपना पक्ष रखा और यीशु से कहा, "शिक्षक, यह महिला व्यभिचार के काम में फंसी पाई गयी हैं। मूसा का कानून हमें ऐसी महिलाओं को पत्थर मारने की आज्ञा देती है । अब आप क्या कहते हैं?" वे इस सवाल को एक जाल के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे, ताकि उस पर आरोप लगाने का आधार बन सके। लेकिन यीशु नीचे झुका और अपनी उंगली से जमीन पर लिखना शुरू कर दिया। जब वे उससे पूछताछ करते रहे, तो वह सीधे उठा और उनसे कहा, **"यदि आप में से कोई भी पाप के बिना है, तो सबसे पहले उसे पत्थर मारे ।"** फिर से वह झुका गया और जमीन पर बैठ गया। इस पर, सारे लोग एक एक करके दूर जाना

शुरू कर दिया, केवल यीशु को छोड़ महिला के साथ और कोई नहीं रहा .यीशु ने सीधे खड़े होकर उससे पूछा "महिला, वे कहाँ हैं? क्या किसी ने तुम्हारी निंदा नहीं की?" "किसी ने नहीं, रब्बी," उसने कहा। "तब तो मैं भी तुम्हारी निंदा नहीं करता हूं," यीशु ने कहा । "अब जाओ और फिर पाप न करना ।" (यूहन्ना 8: 1-11)

यीशु मसीह उस महिला को पत्थर मार सकता था, क्योंकि वह पूरी तरह से पवित्र था । पवित्र बाइबल कहती है, कि वह पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग था । (इब्रानियों 7:26)

"परमेश्वर ने अपने बेटे को दुनिया के लॉगों कॉ दॉषी ठहराने के लिए नहीं बल्कि दुनिया को बचाने (सभी लोगों को मोक्ष प्राप्ति) के लिए भेजा था। यीशु मसीह ने कई लोगों को बचाने और अधर्मियों (पापियों को) को नष्ट करने के लिए दुनिया में नहीं आए। वह पापियों को खोजने और उन्हें बचाने और उन्हें अनंत जीवन या मुक्ति देने के लिए आए थे।" कोई अपवित्र वस्तु तो उसमें प्रवेश तक नहीं कर पायेगी और न ही लज्जापूर्ण कार्य करने वाले और झूठ बोलने वाले उसमें प्रवेश कर पाएँगे उस नगरी में तो प्रवेश बस उन्हीं को मिलेगा जिनके नाम मेमने की जीवन (मोक्ष प्राप्ति) की पुस्तक में लिखे हैं। (प्रकाशितवाक्य 21:27)

"ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय, सत्य, निरन्तर करूणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमाकरने वाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा" क्योंकि वह एक नीतिदायक न्यायाधीश है। (निर्गमन 34: 6-7)

पवित्र पुस्तक कहता है की 'मनुष्य के मन के विचार में जो कुछ बचपन से उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'। (उत्प 6: 5, रोमि 3:11, 23)

"जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी।"

(नीतिवचन 28:13)

अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। हमारे पापों का प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी। (1यूहन्ना 2: 2)

पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

(1यूहन्ना 1: 7-9)

हम यीशु के लहू से साफ हो गए थे, परम पवित्र जिसने परमेश्वर की इच्छा का पालन करते हुए, सभी कुल और सभी राष्ट्रों की भाषाओं और सभी जातियों, पंत और नस्ल के सभी लोगों के पापों को अपने ऊपर ले लिया। बलिदान के एक मेमने के रूप में रक्त बहाया और यह कहा जाता है कि यह 'समाप्त' है। यीशु को हमारे अपराधों के लिए छेद दिया गया था, वह हमारी दुर्बलताओं के लिए कुचला गया था, जो सजा हमें शांति प्रदान करती थी वह उस पर थी और उसके घावों से हम चंगे हो गए । (इब्रानियों 9 और 10, यशायाह 53:5-6)

वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धामिर्कता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए। (1 पतरस 2:24)

वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहिचान लें। क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है, उन्होने सबका विमोचन कार होकर अपने आपको क्रुस पर बलि चढा दिया।

(1 तीमुथियुस 2: 4-6)

उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है। (प्रेरित 16:31, रोमियो 10:9-13)

राज्य समाचार पत्र उदयवाणी में 24-03-2013 को
और प्रजावाणि में 25-05-2013 को प्रकाशित एक लेख।

17. मृत्यु के बाद हमारा क्या होता है? इस सवाल का स्पष्ट जवाब बाईबल में है।

यदि आप मोक्ष पाना चाहते हैं तो यीशु मसीह के करीब रहें, वह किसी भी परमेश्वर से ऊंचा है जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं।

-**स्वामी विवेकानंद** (क्रति श्रेणि, संपुट-7, पा. सं.: 53)

यदि आप उद्धार चाहते हैं, तो केवल यीशु को ही निहारें क्योंकि वह अन्य सभी देवताओं से बड़ा है जिनकी आप कल्पना कर सकते हैं। हमें इस दुनिया को छोड़ना होगा, इसलिए, यह जानना आवश्यक है कि -मैं कौन हूं? मृत्यु के बाद मैं कहां जाऊंगा? पवित्र बाइबल इसके बारे में क्या कहता है?

स्वर्ग और पृथ्वी/ सृष्टि का निर्माण और पाप में मनुष्य का पतन

आदि में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि और समानता में बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से बनाया और उसके नथनों में जीवन की सांस फुक दिया, और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया। तब परमेश्वर ने आदमी को गहरी नींद में डाल दिया, उसने मनुष्य (आदम) की पसली ली और उसमें से एक महिला को बनाया। परमेश्वर ने उनके लिए एक बगीचा बनाया और उनकी सराहना की और आदाम और हव्वा से कहा कि, "बगीचे के किसी भी पेड़ से खाने के लिए स्वतंत्र हैं, केवल उस पेड़ के फल को छोड़कर जो अच्छे और बुरे के ज्ञान को प्रेरित करता है, लेकिन परमेश्वर की आज्ञा न मानने वाली महिला ने शैतान के बहकावे मे आकर उस पेड़ से (मना किया हुआ) फल खाया, और अपने पति को दिया और उसने भी खाया। इस प्रकार पाप ने मानव जाति में प्रवेश किया, यह देखकर कि मनुष्य की दुष्टता पृथ्वी पर कैसे बढ़ गई थी और उसके मन में हर समय केवल बुरे विचार थे, यह देख कर परमेश्वर को दुःख हुआ और वह मनुष्य को बना कर पछताया । (उत्पत्ति1-6)

अंतिम दिनों के संकेत

क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुडौल होंगे। ये सब बातों में पीड़ाओं का आरम्भ होगा। तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालने और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा | (मत्ती 24: 7-14)

दुनिया कब तक खत्म होगी और आखिरी दिनों में क्या होगा?

परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आएगा। आकाश बड़ी गरज के साथ लोप हो जाएगा, और तत्व आग से भस्म हो जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर का सब काम जलकर राख हो जाएगा। (2 पतरस 3:10)

लगभग 2000 वर्ष पहले यूहन्ना ने, जो यीशु मसीह का एक प्रिय शिष्य था उसने एक दर्शन इस प्रकार वर्णन किया है:-

जब उस ने छठवीं मुहर खोली, तो मैं ने देखा, कि एक बड़ा भूईडोल हुआ; और सूर्य कम्बल की नाईं काला, और पूरा चन्द्रमा लोहू का सा हो गया। और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आन्धी से हिल कर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं। और आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़, और टापू, अपने अपने स्थान से टल गया। और पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतंत्र, पहाड़ों की खोहों में, और चट्टानों में जा छिपे। और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो। क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है?

(प्रकाशितवाक्य 6: 12-17)

परमेश्वर ने नरक को क्यों बनाया है?

तब न्याय के दिन वह अपने बाएं तरफ़ वालों से कहेगा, हे श्रापीत लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली। तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की? तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। और यह अनन्त दण्ड मतलब नरक भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे मतलब स्वर्ग में। (मत्ती 25: 41-46)

दुनिया खत्म होने के बाद या हमारी मृत्यु के बाद हमारे साथ क्या होता है?

मनुष्य के लिए एक बार मरना नियुक्त है, और उसके बाद न्याय आता है।

(इब्रानियों 9:27)

निर्णय दो श्रेणियों में आता है:

1. जिनके पाप क्षमा किए गए हैं वे स्वर्ग जाएंगे। फिर भी सभी विश्वासी मसीह के न्यायपीठ के सामने उपस्थित होते हैं। यह न्याय नरक में भेजने की सज़ा के लिए नहीं बल्कि पुरस्कार, मुकुट देने के लिए है। (प्रकाशितवाक्य 2:11)
2. जिनके पाप क्षमा नहीं किए गए हैं, वे (युग के अंत में) महान श्वेत सिंहासन के सामने खड़े होंगे जहाँ पुस्तकें खोली जाएँगी। उनका न्याय पुस्तकों में लिखी बातों के अनुसार और उनके कर्मों के अनुसार किया जाएगा, और यदि किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं पाया गया, तो उसे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अस्वीकार करने की सज़ा के रूप में आग की झील में फेंक दिया जाएगा। (प्रकाशितवाक्य 20:12-15)

लेकिन कायर, अविश्वासी, व्यभिचारी, हत्यारे, यौन रूप से अनैतिक, जादू की कला का अभ्यास करने वाले, मूर्तिपूजा करने वाले और झूठ बोलने वाले सभी उस झील में जो आग और गन्धक से जलती रहती है सब वहाँ होंगे। वहाँ, काटने वाला कीड़ा न मरेगा, न ही आग बुझाई जाएगी। (प्रकाशितवाक्य 21:8 मरकुस 9: 48)

हमें नरक से बचने और स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए क्या करना चाहिए? बाद मे हमारे साथ क्या होता है?

1. एक धनी आदमी, जो कानून का पालन करता था, यीशु के पास आया और पूछा कि मुझे क्या अच्छा काम करना चाहिए जिससे मुझे अनंत जीवन या मुक्ति मिल सके? यीशु ने उससे कहा, अगर तुम सिध्द परिपूर्ण होना चाहते हो तो जाओ और जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेचो और गरीबों को दे दो और तुम्हारे पास स्वर्ग में खजाना होगा, तब फिर मेरे पीछे हो लो। जब धनी आदमी ने यह सुना, तो वह दुखी होकर चला गया, क्योंकि उसके पास बहुत धन था। उसके लिए यीशु ने कहा कि एक धनी आदमी के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है; धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

   (मत्ती 19: 16-26, 5: 3)
2. यीशु ने मार्था से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है? (यूहन्ना 11: 25-26)
3. किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें।

   (प्रेरितों के काम 4:12)
4. उस की सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हें, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी। (प्रेरितों 10:43)

5. उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। (प्रेरितों 16:31)

~*~*~*~*~*~

06-04-2012 को शिवमोग्गा जिले के सभी
दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित एक लेख।

18.क्रुस पर बोली गई येशु मसीह की सात वाणियाँ।

मैं प्राच्य कि तरह येशु की अराधना करता हुं तो मुझे सिर्फ एक हि मार्ग है और वह कहता है कि मुझे येशु मसीह को भगवान कि तरह पूजना चाहिये। **- स्वामि विवेकानंद**

(क्रति श्रेणि, संपुट 7, पा. सं: 59)

- यीशु ने खुद्को बेरहमी से यातना देने वालों को देखते हुए कहा:

1. येशु- ***हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहें हैं।*** (लूका 23:34)

- उसके लिए, जिस ने अपने पापों को कबूल किया और स्वर्ग के लिए प्रार्थना की उसे येशुने कहा:

2. **येशु- मैं तुझ से सच कहता हूं; कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।** (लूका 23:43)

- अपनी माँ और शिष्य को पास खड़ा देखा, और कहा:

3. **येशु अपनी माता से- हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है। तब उस चेले से कहा, यह तेरी माता है।** (यूहन्ना 19: 26-27)

- जब यीशु हमारे पापों के लिए परमेश्वर के पूर्ण निर्णय को वहन कर रहे थे, तब उन्होंने आध्यात्मिक वीरानी को झेला और कहा:

4. येशु- एलोई, एलोई, लमा शबक्तनी जिस का अर्थ यह है; **हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?** (मरकुस 15:34)

- यीशु पिछली रात गिरफ्तार किया गया था और दूसरे दिन सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक कडी धूप मे लहू बहते सूली पर यातना सहते हुये:

5. येशु पवित्र शास्त्र की बात पूरी करते ही कहा - **मैं प्यासा हूं।** (यूहन्ना 19:28)

- जब येशु ने क्रूस पर छुटकारे का काम पूरा किया, तो उसने कहा:

6. येशु- **पूरा हुआ।** (यूहन्ना 19:30)

- प्रभु यीशु ने पिता (परमेश्वर) की इच्छा को पूरा करते हुए कहा:

7. येशु- "**हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं:" यह कहकर प्राण छोड़ दिए।** (लूका 23:46)

उस शुक्रवार को 'गुड फ्राइडे' के नाम से जाना जाता है जब संसार के सभी मनुष्यों के पापों का निवारण हो जाता है।

~*~*~*~*~*~

शिमोगा लोकल डेली न्यूज पेपर में 06-12-2013 को प्रकाशित एक लेख।

19. पूरे विश्व में येशु की शिक्षाओं की घोषणा!

लगभग 2000 साल पहले, मानव शरीर में इस दुनिया में पैदा हुए ईसा मसीह 33½ साल तक जीवित रहे। पृथ्वी पर अपने जीवन के अंतिम साडेतीन वर्षों के दौरान, उसने शत्रुता, स्वार्थ और भ्रष्टाचार से भरी दुनिया में परमेश्वर के राज्य के बारे में प्रचार करते हुए इस्राएल की पूरी भूमि की यात्रा की। अपने सेवकाई की शुरुआत में, उन्होंने 12 शिष्यों को चुना जिन्हें उन्होंने प्रेरितों के रूप में नामित किया। उसने उन्हें आज्ञा दी, "देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ।"और इस्त्राएलियोंसे कहा कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है। पापों के लिए पश्चाताप करें और मुक्ति प्राप्त करें। शिष्यों ने लौटकर कहा, प्रभू यहां तक कि आपके नाम पर शैतान भी हमारे अधीन हैं! "आनन्दित हों कि तेरे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।"

पतरस ने यीशु से कहा, “देख, हम सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं, तो हमें क्या मिलेगा?” यीशु ने कहा, "हर कोई जिसने घरों या भाइयों या बहनों या पिता या माँ या बच्चों या भूमि को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, वे सौ गुना फल प्राप्त करेगा और अनन्त जीवन (मुक्ति) प्राप्त करेगा।" पुनरुत्थान के बाद, यीशु अपने स्वर्गारोहण से पहले पृथ्वी पर 40 दिनों के दौरान ग्यारह बार अपने शिष्यों को दिखाई दिया। स्वर्ग पर उठा लिए जाने से पहले यीशु ने अपने चेलों से कहा, “स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।” "सारी दुनिया में जाओ और सारी सृष्टि के लोगों के लिए सुसमाचार (मुक्ति का रास्ता) का प्रचार करो।"

बारह शिष्यों ने विलासी जीवन जीने के लिए यीशु मसीह का अनुसरण नहीं किया और न ही किसी प्रसिद्धि या नाम के लिए। वास्तव में, यीशु ने कभी भी उन्हें परेशानी मुक्त जीवन देने का वादा नहीं किया और न ही पृथ्वी पर सुंदर भविष्य का लालच दिया। हालाँकि चेलों के पास यरूशलेम शहर या गलील देश में आराम से रहने की योजना बनाने का हर एक मौका था, लेकिन उन्होंने स्वेच्छा से जीवन जीने के लिए एक खतरनाक मार्ग चुना। उन्होंने शांति, प्रेम और मेल-मिलाप के संदेश का प्रचार किया, जो यीशु मसीह ने उन्हें सिखाया था वह किया!

यीशु के चुने हुए 12 प्रेरितों (शिष्यों) और उनकी प्रतिबद्धता:-

(मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:16-19; लूका 6:14-16)

1. पतरस:- वह एक मछुआरा था और यीशु के सबसे प्रिय शिष्यों में से एक था। वह एक मजबूत व्यक्ति थे, फिर भी उनकी एक कमजोरी थी। यीशु मसीह ने जब इस दीन व्यक्ति को बुलाया तो वह घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला- प्रभु, मैं पापी हूं कृपया मुझे छोड़ दें। उनका सीधा और प्यार करने वाला व्यक्तित्व था। उसने यीशु के सामने स्वीकार किया, "तू मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र है। तेरे पास अनन्त जीवन के वचन हैं"। मसीह ने किसी और को प्रशिक्षित नहीं किया जैसे उसने पतरस को प्रशिक्षित किया। उसने किसी की उतनी प्रशंसा या डाँट नहीं की जितनी उसने पतरस को डाँटा था। हालाँकि वह एक महान विद्वान नहीं था, लेकिन मसीह के पुनरुत्थान के बाद, उसके एकल उपदेश ने 3000 लोगों को मसीह तक पहुँचाया। उसकी छाया बीमारों को चंगा करती थी। परमेश्वर ने उसे

शक्तिशाली रूप से इस्तेमाल किया। यीशु मसीह के जी उठने के बाद उन्होंने बड़े साहस के साथ प्रचार किया। जब वह रोम नगर में क्रूस पर चढ़ाया गया, यह जानते हुए कि वह मसीह के समान मरने के योग्य नहीं था। उसने उनसे अपना सिर नीचे करके क्रूस पर चढ़ाने के लिए विनती की। इसी क्रम में उसकी हत्या कर दी गयी! (शहीद का वर्ष ई. 64)

2. अंद्रियास:- वह पतरस का भाई था और पहले वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का शिष्य था। एक बार जब यूहन्ना ने यीशु को देखा और कहा, “देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है” तो वह यीशु के पीछे हो लिया। वह वही है जो पतरस को मसीह के पास ले गया। भले ही वह यहुन्ना द्वारा पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित किया गया था और एक सक्षम चेला था, वह पतरस के साथ था और कई लोगों को मसीह की ओर ले जाने वाली सेवा में रीढ़ की हड्डी के रूप में खड़ा था और मसीह की कलीसिया के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था। वह हम सभी के लिए एक आदर्श हैं। अंत में, उसको क्रूरता से कोड़े मारे गये और X आकार के क्रॉस पर लगभग 2 दिनों तक उस स्थान पर लटकाया गया जहाँ पतरस ने 3000 लोगों को मसीह और मोक्ष तक पहुँचाया। उन्होंने अपनी मृत्यु तक मसीह के प्रेम और मुक्ति के मार्ग का प्रचार किया। (शहीद का वर्ष ई. 70)

3. याकुब:- याकुब जो यहुन्ना का बड़ा भाई था, वह यीशु मसीह का दूर का रिश्तेदार था और हो सकता है कि वह यीशु को बचपन से जानता हो। वह 'सन्स ऑफ थंडर' उपनाम से प्रभु यीशु की सेवकाई में शामिल थे। उसके घुटने ऊँट के पैरों की तरह खुरदरे थे क्योंकि वह हमेशा अपने घुटनों पर बैठकर प्रार्थना करता था। एक बार जब यीशु मसीह पतरस, याकूब और यूहन्ना को एक ऊँचे पहाड़ पर प्रार्थना करने के लिए ले गए और उनके सामने उनका रूप बदल गया, तो उनका चेहरा सूरज की तरह चमक उठा और उनके कपड़े रोशनी की तरह चमक उठे। यह एक विशेष बात है कि यीशु अपने साथ पतरस, याकुब और यहुन्ना को गतसमनी में प्रार्थना करने के लिए ले गए क्योंकि वह सूली पर चढ़ने का समय निकट आ रहा था। स्पेन के राजा हेरोदेस ने न केवल ईसाई मण्डली में कुछ लोगों पर अत्याचार किया, बल्कि तलवार से उसका सिर काट कर मार डाला। वह यीशु के लिए शहीद होने वाले पहले प्रेरित थे। (शहीद का वर्ष ई. 44-45)

4. यहुन्ना:- यहुन्ना याकुब का भाई था। उन्हें 'सन ऑफ थंडर' भी कहा जाता था। वह सबसे प्रिय शिष्य था जो हमेशा यीशु मसीह के साथ रहता था और वह उनकी छाती से लगा रहता था। जब यीशु क्रूस पर था, तो उसने उसे देखा और अपनी माँ से कहा, "यह रहा तेरा बेटा", फिर उससे कहा, "यह रही तेरी माँ"। तभी से उन्होंने उसे बड़े प्यार से अपने घर में रखा। उसके पास क्या ही आशीष थी! वह यीशु के साथ था जब उसे सूली पर चढ़ाया गया था, जब उसके सभी शिष्य डर के मारे भाग गए थे। एक बार उसे खौलते हुए तेल में डाला गया परन्तु परमेश्वर ने उसे हानि से बचा लिया। "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।" यीशु के ये शब्द उनके जीवन में सत्य पाए जा सकते हैं। जब वह पतमुस द्वीप की जेल में कैद था, यीशु ने उसे एक दर्शन दिया और उसे वह सब बताया जो अंत समय के दौरान होगा। वह यीशु का एकमात्र शिष्य था जो स्वाभाविक रूप से वृद्धावस्था में मर गया। (प्राकृतिक मृत्यु ई. 95)

5. फिलिप्पुस: जॉन के सुसमाचार में फिलिप का अक्सर उल्लेख किया गया है, विशेष रूप से यूनानी समुदाय के संबंध में। ग्रीक नाम रखने और संभवतः ग्रीक बोलने वाले फिलिप ने अपने समुदाय के सदस्यों को यीशु से परिचित कराने के लिए एक सेतु के रूप में कार्य किया। अंतिम भोज के दौरान, फिलिप ने विशेष रूप से यीशु से उन्हें पिता दिखाने के लिए कहा, जिसने यीशु को अपने शिष्यों को पिता और पुत्र की एकता के बारे में सिखाने के लिए एक महत्वपूर्ण समय प्रदान किया और पिता और पुत्र एक ही है के बारे में बताया । नये नियम में प्रेरितों में फिलिप को लगातार पांचवें स्थान पर रखा गया है।परंपरा यह मानती है कि फिलिप को हिएरापोलिस शहर में सिर काटकर शहीद कर दिया गया था। वह आमतौर पर लैटिन क्रॉस के प्रतीक से जुड़ा हुआ है। फिलिप से जुड़े अतिरिक्त प्रतीकों में दो रोटियों के साथ एक क्रॉस, रोटी की एक टोकरी, पितृसत्तात्मक क्रॉस के साथ एक भाला और एक बढ़ई के वर्ग के साथ जोड़ा गया एक क्रॉस शामिल है। जुलाई 2011 में, फिलिप की कब्र की खोज तुर्की के डेनिज़ली के पास हिएरापोलिस में की गई थी। तुर्की समाचार रिपोर्टों के अनुसार, पुरातत्वविदों ने एक नए पाए गए चर्च के भीतर कब्र का पता लगाया, जहां शिलालेखों और कब्र के डिजाइन ने इसे यीशु के शहीद प्रेरित के रूप में पहचाना। (शहीद का वर्ष ई. 54)

6. बार्थोलोमयुस [नथानिएल]: वह मूसा के कानून का अध्ययन कर रहा था और भविष्यद्वक्ताओं ने क्या लिखा था और मसीहा की प्रतीक्षा कर रहा था। यीशु मसीह उद्धारकर्ता। वह इस्राएली था जो यीशु के शिष्य फिलिप्पुस के माध्यम से यीशु को देखने के लिए यीशु के पास आया था। प्रभु यीशु ने उसे 'बिना पाखंडे के इज़राइल' कहा। उसने उत्तर दिया। 'रब्बी, तुम परमेश्वर के पुत्र हो! आप इज़राइल के राजा हैं"। यीशु के साथ उनके संक्षिप्त साक्षात्कार ने उन्हें यीशु का शिष्य बना दिया। वह एक प्रार्थना नायक थे जो प्रेरितों के साथ प्रार्थना में एकजुट थे। वे अपोस्टोलिक काल के दौरान चर्च की स्थापना में सबसे महत्वपूर्ण चेलों में से एक थे। उसने भारत और आर्मेनिया के देशों में कड़ी सेवा की। कोड़े ने उसे बुरी तरह से मारा और अंत में उसकी चमड़ी उतार दी गई और फिर उसका सिर काट दिया गया।
(शहीद का वर्ष ई. 54)

7. थोमा: वह भी एक मछुआरा था। परमेश्वर में उनका विश्वास था अंध विश्वास नहीं था। जब वह मसीह के पुनरूत्थान पर सन्देह कर रहा था, तब यीशु इस शिष्य को एक बार फिर दिखाई दिया जब वह अन्य शिष्यों के बीच में था। वह न केवल पुनरुत्थित यीशु को देखने के लिए बल्कि उनकी महिमा को छूने के लिए भी आशीषित था! सन् 52 ई. में वह भारत के केरल राज्य में आया, वहाँ वह दस वर्षों तक रहा। बाद में, वे दस वर्षों के लिए चेन्नई में रहे और उन्होंने इस राज्य के लोगों को यीशु के बारे में बताया। मन्दिर के याजकों ने उस पर भाला चलाया, और उसे भट्ठे में डालकर मार डाला। वह यीशु मसीह के प्रेरित थे जिनकी मृत्यु भारत में हुई थी। दुनिया में प्रेरितों की कब्रों पर केवल तीन चर्च बने हैं, वेटिकन सिटी में सेंट पीटर चर्च, स्पेन में सेंट जेम्स चर्च और चेन्नई, भारत में सेंट थॉमस चर्च। भारत सरकार ने थॉमस की स्मृति में दो डाक टिकट जारी किए।

(शहीद का वर्ष 03-07-0072) स्थान: मायलापुर, (चेन्नई), भारत

8. मत्ती: मत्ती रोमन सरकार के अधीन एक कर संग्राहक था, मत्ती अमीर और अच्छी तरह से योग्य था। जब यीशु ने कहा, "मेरे पीछे आओ", तो वह यीशु के आह्वान के प्रति आज्ञाकारी था, उसने अपना पेशा छोड़ दिया, अपनी संपत्ति को अलग कर दिया और यीशु का अनुसरण करने का फैसला किया। उसने यीशु

और उसके शिष्यों को रात के खाने में मेहमानों के रूप में अपने घर बुलाया और कर संग्राहकों और अन्य बदनाम पापियों को भी आमंत्रित किया। उसने सभी को यीशु से मिलवाया ताकि वे आशीषित हों। वह अरामाईक, ग्रीक, हिब्रू और लैटिन में पारंगत था। उसने इथियोपिया, फारस और सीरिया में सेवा की और इन जगहों पर चर्चों की स्थापना की। उसने अरामी भाषा में मसीह का सुसमाचार लिखा। उसे मौत के घाट उतार दिया गया था। (शहीद का वर्ष ई. 60-70)

9. अल्फियस का पुत्र याकुब: अपने भाई मत्ती के साथ, याकुब उन शिष्यों में से एक थे जिन्होंने यीशु का अनुसरण किया और मसीह के पुनरुत्थान के बाद उन्होंने यरूशलेम में सेवा की और वहाँ के चर्चों को मजबूत किया। याकुब एक दीवार पर बैठे उपदेश दे रहा था जब यहूदी धर्मगुरुओं ने उसे दीवार से नीचे फेंकने का फैसला किया। जाहिर तौर पर वह बच गया। जब लोगों ने महसूस किया कि वह मरा नहीं है, तो उसे पीटा गया, पथराव किया गया और एक डंडे से उसके सिर पर वार कर हिंसक रूप से समाप्त कर दिया गया। (शहीद का वर्ष ई. 63)

10. तद्दै: उन्हें याकुब का बेटा यहुदा भी कहा जाता है। उसने एक बार यीशु से पूछा, "हे प्रभु, यह कैसे हो सकता है कि आप अपने आप को हमारे सामने प्रकट करेंगे, और दुनिया के लिए नहीं?"। यीशु ने उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके यहां वास करेंगे। और जो वचन तुम सुन रहे हो, वह मेरा नहीं, परन्तु पिता का है, जिस ने मुझे भेजा है। तद्दै पहला प्रेरित था जिसने यरूशलेम को छोड़ दिया और विदेशी भूमि में सुसमाचार को साझा किया। उसने फारस और उत्तरी फारस में अनन्त जीवन के बारे में साझा किया और बहुतों को मसीह के पास ले आया। यहुदा अर्मेनिया में था जब उसे लकड़ी के क्लब से पीट-पीट कर मार डाला गया। (शहीद का वर्ष ई. 72)

11. शिमोन जलोतेस: वह उन कट्टरपंथियों के समूह से संबंधित था, जो रोमनों के शासन से नफरत करते थे, वह ईसा मसीह का उपदेश सुनने के बाद तलवार से ही नहीं, बल्कि दुनिया में यहूदा का राज्य स्थापित करने के लिए लड़ रहा था; उन्होंने इस सत्य को पाया कि प्रेम के माध्यम से ईश्वर का राज्य स्थापित किया जा

सकता है और वह एक बहुत ही नेक व्यक्ति बन गए और कई देशों में ईसा मसीह की शिक्षाओं का प्रचार किया। यहूदा इस्करियोती की तरह, जिसने यीशु को धोखा दिया था, उसने सोचा कि मसीह यहूदियों को रोमन शासन से मुक्ति दिलाएगा। यदि जूडस ने गुरु के प्रति गद्दार होने के कारण आत्महत्या कर ली, तो क्या यह बड़ी बात नहीं है कि वह गुरु की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए शहीद हो गया? इस शिष्य ने मिस्र, बहरीन, अफ्रीका, मोरक्को, लीबिया और ग्रेट ब्रिटेन सहित अन्य देशों में ईसा मसीह की शिक्षाओं का प्रचार किया। उन्हें सूली पर चढ़ाया गया और फिर टुकड़ों में काटकर मार डाला गया. (शहीद का वर्ष ई. 74)

12. यहूदा इस्करियोती: एक बार, एक स्त्री महँगे बबूल के तेल का एक घड़ा लेकर आई, उससे यीशु के पैरों का अभिषेक किया, और उसके पैरों को अपने बालों से पोंछा। तेल की सुगंध से सारा घर महक उठा। यह देखकर, यहूदा ने टिप्पणी की कि तेल तीन सौ चांदी के सिक्कों के बराबर बेचा जा सकता था। उनके लिए पैसा यीशु से अधिक महत्व रखता था। हालाँकि मसीह ने, अपनी सर्वज्ञता में, यहूदा के कार्यों का पूर्वाभास कर लिया था, फिर भी उन्होंने उसे अंत तक प्यार दिखाते हुए, साढ़े तीन साल तक अपने साथ रहने की अनुमति दी। जबकि कई पापी और गलत काम करने वाले मसीह के जीवन, शिक्षाओं और चमत्कारों से बदल गए, यहूदा में कोई बदलाव नहीं आया। पैसे के प्रेम से प्रेरित होकर – (जो सभी पापों की जड़ है) - उसने अंततः चांदी के तीस सिक्कों के लिए मसीह को धोखा दिया। ऐसा करके, वह इतिहास के सबसे कुख्यात गद्दारों में से एक बन गया, जिसने मानवता के उद्धारकर्ता मसीह को उसके दुश्मनों के हाथों में सौंप दिया। आज तक, माता-पिता उसके कुख्यात विश्वासघात के कारण अपने बच्चों का नाम "यहूदा" रखने से बचते हैं। बाद में यहूदा ने अपनी जान ले ली और ऐसा करते हुए उसने अपनी आत्मा खो दी। यदि उसने पश्चाताप किया होता और मसीह से क्षमा मांगी होती, तो निश्चित रूप से उसे क्षमा मिल गई होती। जैसा कि पवित्र बाइबिल में वर्णित है, उनका नाम एक बार नए यरूशलेम की नींव पर बारह प्रेरितों के बीच लिखा गया था, लेकिन उनके विश्वासघात ने उस सम्मान को धूमिल कर दिया। (आत्महत्या का वर्ष: ए. डी. 70)

13. पौलुस: पुनर्जीवित हुये प्रभु येशु से ही चुने हुये प्रेरित है संत पौल। वह युवा थे,

धनवान थे, विद्वान थे और अच्छे नेता थे। वह यहुदी धर्म का अनुयायी था और यीशु मसीह का अनुसरण करने वालों को वह कारागृह मे बंद करने और उनकी हत्या करने के लिये महा याजकों से अधिकार पत्र पाकर यात्रा करते समय येशु के दर्शन प्राप्त कर उनके वाच्यानुसार अन्य लोगों को, राजाओं को और इस्रायलियों को येशु का नाम प्रकट करने के लिये नियुक्त किया गया। इसी वजह से अपना सब कुछ कचरे कि तरह उन्हे प्रतीत हुआ। परमेश्वर ने इनके हाथो से अनेक अद्‌भुत कार्य किये। उनके वस्त्र रोगियों के उपर गिरते ही वह स्वस्थ हो जाते और बूरी आत्मायें भी छोडकर चली जाती और इन्होने मृतकों को भी जिवित उठाया है।इतना सब होने पर भी अपने ही लोगों से भरपूर विरोध पाकर अनेक कारागरों मे बंदी होकर ३०० कोडे से मार भी खायें है। उपवास रहकर, ठंड मे बिना वस्त्र के रहकर, अनेक खतरों का सामना कर अनेक बार मौत के मुह मे फंसा हुआ, प्रयत्न और परिश्रम से येशु का संदेश प्रसार करने वाला और पवित्र शास्त्र के १३ पत्रियों को लिखे है। अंत मे इन्होने " श्रेष्ट दौड लगायी है, येशु पर विश्वास सम्भाला है, नीतियुक्त को मिलने वाली जयमाला मेरे लिये तैयार है" कहनेवाला श्रेष्ट प्रेरित है। (शहीद का वर्ष ई.70)

सारांश

प्रेरितों ने मसीह के साथ साढ़े तीन साल बिताए। इस दौरान, उन्होंने न केवल उनके बेदाग जीवन और दिव्य स्वभाव को देखा, बल्कि पुनर्जीवित मसीह के साथ लगभग चालीस दिन भी बिताए। स्वर्ग में उनके स्वर्गारोहण को देखने के बाद, उन्होंने कई परीक्षणों और उत्पीड़नों का सामना करने के बावजूद, मसीह के संदेश को फैलाने और प्रचार करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वे उनके कारण अपमान सहने और यहाँ तक कि बलिदान देने के लिए तैयार थे, अपने बलिदानों में आनंद पाते थे।

प्रभु यीशु मसीह का मंत्रालय केवल परमेश्वर के राज्य के बारे में प्रचार करने तक ही सीमित नहीं था, बल्कि कई चमत्कारी कार्यों द्वारा भी प्रमाणित किया गया था। उनकी शिक्षाओं ने दिव्य ज्ञान प्रदान किया और ईश्वरीय गुणों को स्थापित करके कई लोगों के जीवन को बदल दिया, जिससे उनके अनुयायी समाज में सार्थक योगदान करने में सक्षम हुए। सुसमाचार प्रचार का यह मिशन प्रेरितों और शिष्यों द्वारा चलाया गया।

डॉ. ग्राहम स्टेन्स

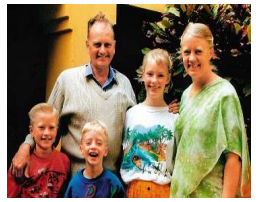

ऑस्ट्रेलिया के डॉ. ग्राहम स्टेंस हमारे देश के उड़ीसा राज्य में कुष्ठ रोगियों की सेवा कर रहे थे। 22-01-1999 को जब मिशनरी ग्राहम स्टेंस अपने दो प्यारे बच्चों 10 वर्षीय फिलिप और 6 वर्षीय टिमोथी के साथ मनोहरपुर नामक गाँव में एक वैन में सो रहे थे, रात में बदमाशों ने वाहन में आग लगा दी और उन्हें पीटा और भयानक तरीके से जिंदा जला दिया। पता चला कि बच्चों के जले हुए कंकालों को पिता की बाहों के कंकाल ने घेर रखा था। कोढ़ियों के सबसे उपेक्षित वर्ग की सेवा और पुनर्वास करने वाले के साथ कैसा क्रूर व्यवहार।

हालांकि इस क्रूर घटना से स्तब्ध ग्राहम स्टेंस की पत्नी ग्लेडिस और उनकी बेटी एस्तेर ने उन अपराधियों के प्रति अपनी क्षमा प्रदान की। यह एक दिव्य प्रेम है। हां, अगर हर इंसान में ऐसी मनोवृत्ति आ जाए तो हम यहां धरती पर स्वर्ग बना सकते हैं। डॉ. ग्राहम स्टेंस और उनके परिवार की सेवा और बलिदान को देखते हुए, भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार और मदर तेरेसा मेमोरियल इंटरनेशनल अवार्ड देकर सम्मानित किया। आखिरकार, वे अपने गुरु यीशु मसीह के नक्शेकदम पर चले, जिन्होंने उन्हें सूली पर चढ़ाने वालों को देखा और प्रार्थना की, "पिता, उन्हें क्षमा करें क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं।"

उस समय भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति के. आर. नारायणन ने कहा था, "एक व्यक्ति जो कुष्ठ रोगियों के बीच सेवा करने आया है, उसे धन्यवाद दिया जाना चाहिए और आदर्श बनाया जाना चाहिए लेकिन भारत में यह अमानवीय कृत्य जो कि सहिष्णुता और अहिंसा के लिए जाना जाता है, सबसे घिनौना अपराध है।" दुनिया में दयालु" स्टेन की बेटी, ऑस्ट्रेलिया में अपनी चिकित्सा की पढ़ाई पूरी करने के बाद, एक डॉक्टर के रूप में बस गई, अपने पति के साथ, ओडिशा में लोगों के साथ अपनी माँ की बातचीत का समर्थन करती रही है। उन्होंने बारीपदा में ग्राहम स्टेंस मेमोरियल हॉस्पीटल का नव निर्माण किया। ग्लेडिस अभी भी कुष्ठ गृह में कुष्ठ रोगियों के घावों की देखभाल कर अपना ऑपरेशन जारी रखे हुए है।

मदर टेरेसा

यूगोस्लाविया में 26-08-1910 को जन्मी, जब वह 8 साल की थी तब उसके पिता का देहांत हो गया। उसकी माँ ने उसका पालन-पोषण किया जब वह 18 वर्ष की हुई, एग्नेस लोरेटो की बहनों में शामिल हो गई और भारत में एक मिशनरी बन गई। 1929 में वे कलकत्ता आ गईं, 20 साल तक शिक्षिका के रूप में काम किया। उन वर्षों के दौरान उन्होंने अपने आसपास झुग्गियों में रहने वाले लोगों को बीमारी के कारण पीड़ित पाया और उनकी मदद करने का फैसला किया। उन्होंने नर्सिंग प्रशिक्षण के लिए खुद को नामांकित किया, और अपना प्रशिक्षण पूरा होने के बाद, केवल 5 रुपये हाथ में लेकर उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों के लिए एक शरणार्थी केंद्र की स्थापना की।

एक बार वह गरीबों की देखभाल के लिए दवा के लिए लोगों से पैसे मांगने के लिए सड़कों पर गई। एक व्यक्ति ने उस पर चिल्लाते हुए कहा कि मिशनरी पाखंडी हैं और उनकी हथेली पर थूक दिया। फिर उसने अपना दूसरा हाथ बढ़ाकर कहा, "थूक मेरे लिए है, मुझे कुछ गरीबों के देखभाल के लिये लेने के लिए दे दो"। वह आदमी जो उसके हाथ पर थूकता है, उसने अपने किए पर पश्चाताप किया और माफी मांगी और गरीबों की मदद की।कलकत्ता में जहां वह काली मंदिर के पास सेवा कर रही थी, आसपास के लोगों ने उसके खिलाफ यह कहते हुए शिकायत दर्ज कराई कि वह लोगों का धर्म परिवर्तन करा रही है। जांच करने आए अधिकारी ने मदर टेरेसा को मरीजों के घाव साफ करते देखा, शिकायत दर्ज कराने वाले लोगों को बुलाया और कहा, "यदि आपकी मां, बहनें लोगों की सेवा करने के लिए तैयार हैं, जैसा कि ये लोग कर रहे हैं, तो हम तुरंत इन लोगों को यह जगह खाली करने के लिए कहेंगे। आसपास के लोग अपने किए पर शर्मिंदा हुए और लौट गए।

2007 तक उन्होंने 123 देशों में गरीबों, जरूरतमंदों और बीमारों के लिए लगभग 600 केंद्र स्थापित किए थे। उनकी सेवा के सम्मान में भारत सरकार

ने उन्हें भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया और उन्हें नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कैथोलिक परंपरा के अनुसार उन्होंने संत की उपाधि भी प्राप्त की। जब 05-09-1997 में उनका निधन हुआ, तो भारत सरकार ने मदर टेरेसा के लिए एक राजकीय अंतिम संस्कार की मेजबानी की। उन्हें वही मार्शल सम्मान प्रदान किया गया था, यानी उनके शरीर को सेना द्वारा जुलूस में गन कैरिज में ले जाया गया था, जो अतीत में 'एम. के. गांधी'और 'पं. जवाहरलाल नेहरू' जैसे राष्ट्रीय नायकों के लिए आरक्षित था। कई देशों के कई प्रधानमंत्रियों, राष्ट्रपतियों और नेताओं को उनके अंतिम संस्कार समारोह का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला। यह एक ऐसी चीज है जिस पर हर भारतीय को गर्व होना चाहिए।

यदि इस धरती पर हर इंसान गरीबों और जरूरतमंदों के प्रति सम्मान, दया और सहानुभूति दिखाए, तो यह निश्चित रूप से धरती पर स्वर्ग होगा। ईश्वर के प्रेम का अनुभव करने वाले करोड़ों लोग इसे किसी न किसी रूप में दूसरों को बांटते रहे हैं। बहुतों को मसीह में उनके विश्वास के कारण सताया गया है। इन सबके बावजूद लोग मसीह के सुसमाचार को साझा करते रहे हैं। उद्देश्य यह है कि लोग अपने जीवन के माध्यम से प्रेम, दया और भाईचारा दिखायें और उद्धार और अनन्त जीवन प्राप्त करें, जो कि मसीह द्वारा मुफ्त में दिया गया उपहार है। वे समाज में अपने आसपास के लोगों के लिए महान उदाहरण हो सकते हैं।

तो आइए उन लोगों को सलाम करें जो प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं का प्रचार कर रहे हैं।

09-12-2013 को शिवमोग्गा स्थानीय दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित एक लेख।

20. दिव्य ज्ञान

कुछ 3000 साल पहले दो वेश्याएं राजा के पास आकर उसके सम्मुख खड़ी हुईं। उन में से एक स्त्री कहने लगी, हे मेरे प्रभु! मैं और यह स्त्री दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके संग घर में रहते हुए मेरा एक बच्चा हुआ। फिर मेरे ज़च्चा के तीन दिन के बाद ऐसा हुआ कि यह स्त्री भी जच्चा हो गई; हम तो संग ही

संग थीं, हम दोनों को छोड़कर घर में और कोई भी न था। और रात में इस स्त्री का बालक इसके नीचे दबकर मर गया। तब इस ने आधी रात को उठ कर, जब तेरी दासी सो ही रही थी, तब मेरा लड़का मेरे पास से लेकर अपनी छाती में रखा, और अपना मरा हुआ बालक मेरी छाती से लिटा दिया। भोर को जब मैं अपना बालक दूध पिलाने को उठी, तब उसे मरा हुआ पाया; परन्तु भोर को मैं ने ध्यान से यह देखा, कि वह मेरा पुत्र नहीं है। तब दूसरी स्त्री ने कहा, नहीं जीवित पुत्र मेरा है, और मरा पुत्र तेरा है। परन्तु वह कहती रही, नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र है और जीवित मेरा पुत्र है यों वे राजा के साम्हने बातें करती रही। राजा ने कहा, एक तो कहती है जो जीवित है, वही मेरा पुत्र है, और मरा हुआ तेरा पुत्र है; और दूसरी कहती है, नहीं, जो मरा है वही तेरा पुत्र है, और जो जीवित है, वह मेरा पुत्र है। फिर राजा ने कहा, मेरे पास तलवार ले आओ; सो एक तलवार राजा के साम्हने लाई गई। तब राजा बोला, जीविते बालक को दो टुकड़े करके आधा इस को और आधा उसको दो। तब जीवित बालक की माता का मन अपने बेटे के स्नेह से भर आया, और उसने राजा से कहा, हे मेरे प्रभु! जीवित बालक उसी को दे; उसको किसी भांति न मार। परन्तु दूसरी स्त्री ने कहा, वह न तो मेरा हो और न तेरा, उसके दो टुकड़े किया जाए। तब राजा ने कहा, पहिली को जीवित बालक दो; किसी भांति उसको न मारो; क्योंकि उसकी माता वही है। जो न्याय राजा ने चुकाया था, उसका समाचार समस्त इस्राएल को मिला, और उन्होंने राजा का भय माना, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि उसके मन में न्याय करने के लिये परमेश्वर की बुद्धि है। (1 राजा 3: 16-28)

परमेश्वर ने सभी जानवरों को मांस और जीवन के रूप में बनाया है। लेकिन मनुष्य आत्मा, प्राण, मांस से निर्मित है केवल आत्मा के पास ज्ञान है। ज्ञान के बिना मनुष्य पशु के समान है; हालांकि उसके पास भौतिक संपदा, सुंदरता और क्षमता हो सकती है, लेकिन एक व्यक्ति के पास कुछ भी नहीं है, अगर उसके पास ज्ञान नहीं है और ज्ञान है तो उसके पास उच्च स्थिति होगी। बुद्धिमान पुरुष प्रकाश की तरह चमकेंगे; वह धार्मिकता की ओर ले जाया जाएगा और हमेशा के लिए ध्रुव तारा की तरह चमक जाएगा। इसलिए, मानव जीवन में ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है। ज्ञान के बराबर कुछ भी नहीं है। इस दुनिया में विश्वविद्यालय,

शिक्षण केंद्र और अन्य अनुभव हमें ज्ञान दे सकते हैं लेकिन दुनिया दिव्य ज्ञान नहीं दे सकती है। ईश्वर के समक्ष सांसारिक ज्ञान मूर्खता है। दिव्य ज्ञान आत्मा की चिंता है। हमारी आत्मा का परमेश्वर सर्वशक्तिमान ईश्वर है । और हम यह ज्ञान केवल उसके माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। पवित्र बाइबल कहती है, "प्रभु का भय ज्ञान की शुरुआत है और जो लोग उसकी आज्ञा मानते हैं वे बुद्धिमान होंगे।" ईश्वर के भय का अर्थ केवल प्रार्थना, आराधना और अन्य धार्मिक गतिविधियाँ नहीं है, बल्कि पाप को त्यागना है जो कि अभिमान, अहंकार, दुष्ट तरीके आदि हैं|

इसीलिए ईश्वर के शब्दों को प्राप्त करे और उसके आदेशों को अपने ह्रुदय के अंदर खजाने के रूप में संरक्षित करे, जो आपके अपने कानों को ज्ञान की ओर मोड़ देते हैं और ह्रदय को समझने के लिए करें । अंतर्दृष्टि के लिए आग्रह करें और विचारशीलता के लिए जोर से रोएं जैसे कि चांदी और सोना । इस तरह तो आप भी दिव्य ज्ञान प्राप्त करेंगे।

यह परमेश्वर है जो ज्ञान देता है, उसके मुंह से ज्ञान और समझ आती है। वह ईमानदार के लिए जीत रखता है, बुद्धि आपके दिल में प्रवेश करेगी और ज्ञान आपकी आत्मा के लिए सुखद होगा। विवेक आपकी रक्षा करेगा और समझ आपकी रक्षा करेगी, ज्ञान आपको दुष्टता के तरीकों से बचाएगा| यह आपको व्यभिचारी पत्नी से और उसके मोहक शब्दों से बचाएगा। व्यभिचारी पत्नी के घर से मृत्यु की ओर का रास्ता जाता है और उसके रास्ते मृतकों की आत्मा तक पहुंच जाते हैं, जो उसके पास जाता है, वह वापस नहीं लौटता या जीवन का पथ प्राप्त नहीं करता है। विवेक आपको प्रेरित करेगा और आपको अच्छे लोगों के मार्ग पर चलने देगा और धर्मी के मार्ग पर रखेगा। बुद्धि एक आश्रय है क्योंकि धन एक आश्रय है। ज्ञान का लाभ यह है कि यह अपने स्वामी के जीवन को सुरक्षित रखता है। (सभोपदेशक 7:12)। ज्ञान की प्रतीक्षा करें, समझ, बुद्धि, ज्ञान का त्याग न करें और वह आपकी रक्षा करेगी उससे प्यार करोगे तो वह आपके ऊपर नजर रखेगी। यदि आप ज्ञान का सम्मान करते हैं, तो वह आपको समृद्धि लाएगी, यदि आप उसे गले लगाते हैं, तो वह आपको सम्मानित करेगी। वह आपकी मनके पर

कृपा की माला स्थापित करेगी और आपको शोभा का मुकुट देगी। सोना और रुबाई अधिकता में है लेकिन ज्ञान के होंठ एक दुर्लभ गहना है।

एक बुद्धिमान भक्त कहता है - "हे परमेश्वर! मैं आपकी व्यवस्था से कैसे प्यार करूं, मैं दिन भर इस पर ध्यान करता हूं। आपकी आज्ञाएं मुझे मेरे दुश्मनों की तुलना में समझदार बनाती हैं, क्योंकि वे कभी भी मेरे साथ हो सकते हैं। मेरे सभी शिक्षकों की तुलना में अधिक अंतर्दृष्टि है। आपकी विधियों पर मैंने बड़ों की तुलना में अधिक समझ हासिल की, क्योंकि मैं आपके उपदेशों का पालन करता हूं।" (भजन 119: 97-100)

आविष्कार

उदाहरण के लिए, उन सभी आविष्कारक ने, जिन्होंने हमारे जीवन को बेहतर बनाने में मदद करने वाली कई चीजों का आविष्कार करके हमारे अंध विश्वास को त्याग दिया। उन्होंने पवित्र बाइबिल का अनुसरण किया और अपने जीवन में इसके शिक्षण का अभ्यास किया, आविष्कार और आविष्कारक लोगों का उल्लेख नीचे किया गया है:

SL	INVENTIONS	INVENTOR	YEAR	COUNTRY
1	Electric Iron	H.W. Seeley	1882	U.S.A
2	Electric Motor	Moritz Jacobi	1834	Russia
3	Evolution, theory of	Charles Darwin	1858	England
4	Film sound	Dr. Le de Forest	1923	U.S.A
5	Glider	Sir George Calyey	1853	England
6	Insulin	Sir Frederick Banting	1923	Canada
7	Safety Match	J.E. Lundstrom	1855	Sweden

8	Motor car, Petrol	Karl Benz	1885	Germany
9	Radium	Marie & Pierre Curie	1898	France
10	Rubber (vulcanized)	Charles Goodyear	1841	U.S.A
11	Safety Lamp	Sir Humphry Davy	1816	England
12	Telescope	Hans Lippershey	1608	Netherlands
13	Television	John Logic Baird	1926	Scotland
14	Thermometer	Galileo	1593	Italy
15	Valve. Radio	Sir J.A Fleming	1904	Britain

उपरोक्त साधकों में से कई इजराइल देश से थे अर्थात यहूदी; वे ईश्वर की चुनी हुई जाति हैं, यहाँ तक कि ईसा मसीह का जन्म भी यहूदी जाति में हुआ था। यहूदियों को ईश्वर द्वारा विशेष ज्ञान का उपहार दिया गया था। यह जाति विश्व की जनसंख्या का एक प्रतिशत है। इजराइल में दुनिया में सबसे ज्यादा खोज और आविष्कार होते हैं, भले ही यह 0.19 है। उन्हें अब तक कुल 41% यानी 213 नोबेल पुरस्कार मिल चुके हैं।

पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना सब को उदारता से देता है और उस को दी जाएगी जो विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; क्योंकि सन्देह करने वाला समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलती है। ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा। वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है॥

(याकूब 1:5-7)

आइए हम प्रार्थना करें कि दयालु परमेश्वर हमें अपनी बुद्धि से भरें और हमें मुक्ति प्रदान करें|